N. A.

Satyānarayan Katha bhasa tika

सत्यनारायण कथा भा० टी०

Sanskrit

Paper — Printed

1960 Sambat (115 years old)

30 Folio

9.7"x 4.4"

Complete

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२०७६९ नं. २५२

॥ अथ सत्यनारायण कथा भा॰ टी॰ प्रा॰ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मंगलार्थ इष्टदेवताःस्मरण मंत्राः ॥ ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम् ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ वरुणाय नमः ॥ २ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः ॥ सबुध्न्याऽउपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ३ ॥ ॐ विष्णोरराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि॥ वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥ विष्णवे नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवउतोतइषवे नमः ॥ वाहुभ्यामुतते नमः ॥ शिवाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ ॐ सूर्याय नमः॥१॥
ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय॥
इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एषवोऽमी राजा सोमोऽस्माकम्ब्राह्मणानाꣳ राजा॥
ॐ चन्द्रमसे नमः ॥ २ ॥ ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ॥ अपाꣳ-
रेताꣳसिजिन्वति ॥ ॐ भौमाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते
सꣳसृजेथामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥ ॐ
बुधाय नमः ॥४॥ ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छव
सऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणन्धेहिचित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥ ५ ॥ ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं
ब्रह्मणाव्यपिबत् क्षत्रंपयःसोमं प्रजापतिः ॥ ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳशुक्रमन्धस इन्द्र-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्येन्द्रियमिदम्पयो ऽमृतं मधु ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु
पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ ॐ शनैश्चराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ कयानश्चित्र आभुव
दूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्ठयावृता ॥ ॐ राहवे नमः ॥ ८ ॥ ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो
मर्या अपेशसे ॥ समुषाद्भिरजायथाः ॥ ॐ केतवे नमः ॥ ९ ॥ आदित्यादिनवग्रहेभ्यो नमः ॥
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ इष्टदेवताभ्यो नमः ॥
ओं नमः शिवाय ॥ ओम् ॥ हेरम्बो ऽम्बाथ वेधोहरिपशुपतयो भास्कराद्या ग्रहा ये ॥ पञ्चैते लोकपाला अथ
दश विदिता दिक्प्रपा ये महान्तः ॥ मेषाद्या राशयश्चाश्विमुखवरमुखा याश्च नक्षत्रतारा ॥ योगा विष्कु-
म्भकाद्याः सकलसुखकराः पान्तु मामत्र नूनम् ॥ १ ॥ कलौ नारायणःसाक्षात् सत्यनारायणः स्मृतः ।
अतस्तस्य कथा सम्यक् कथनीया सदा द्विजैः ॥२॥ क्रियते विवृतिस्तत्र मयाज्ञेन यथामतिः । शुक्लदेवी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सहायेन सहायेन मनीषिणाम् ॥ ३ ॥ गणपत्यादिमंत्राणां व्याख्यापि क्रियते तथा । तत्तदर्थं समाहृत्य भाष्यादिभ्यो यथातथम् ॥ ४ ॥ हे (मम) मेरें सर्वस्वभूत ! गणेश ! हम (त्वा) आप का (हवामहे) आवाहन करते हैं, (गणानां गणपतिम्) जो गणना किये जावें सो गण तिनके जो अधिपति आप तिनका आवाहन करते हैं (प्रियाणां प्रियपतिम्) प्रियों के मध्य में प्रियपति आप को बुलाते हैं फिर (निधीनां निधिपतिम्) निधि शंख पद्मादिकों के पति आप को बुलाते हैं कि (हे गणपते ! अहं त्वया अजानि) हे गणेशदेव ! मुझको आपने उत्पन्न किया है, कैसा मैं हूं (गर्ब्भधम्) माता के गर्भ से पैदा हुआ हूं सो (हें अज) हे अनादि ! (त्वं गर्भध मासि) आप गर्भ से नहीं भए हो अतएव आप परमेश्वर हो ॥ १ ॥ इस मंत्र कर के श्रीगणेशजी महाराज को गंधादिक से पूजै अरु नमस्कार करै. (वरुणस्योत्तम्भनमिति) इस कर के उत्तम्भन से थाम्हा जाय ऐसे वरुण देवता की प्रार्थना करता है कि—हे काष्ठ ! तू (वरुणस्यो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्तम्भनमसि) वरुणस्य—वरुण का वस्त्र बँधे सोम का थांमनेवाला है गाड़ीका नहीं. उत्तभ्यते ऊपर को थाम्हा जावे गाड़ी के मुख का अग्रभाग अर्थात् जूआ जिस लकड़ी कर के होय सो काष्ठ थामनेवाला अर्थात् सीढुआ कहाता है. फिर शयसंज्ञक काष्ठ को उठाता है कि (स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य) तू वरुणजी का स्कम्भसर्जनी है। गाड़ी में जुते बैलों के गले के बाहर की ओर जिस काठ की लकड़ी जुवे में लगाई जाती हैं वे शम्य कहाती हैं तिनसे बैल इधर उधर नहीं हट सकते तिसी से वे स्कंभसर्जनी कही जाती हैं, सो हे शम्य! तुम वरुणजी की स्कंभसर्जनी हो. स्कंभ धातु रोकने में सर्ज—रचने में स्कंभ रुकना सो सृज्यते रचा जावै अर्थात् किया जावे जिन कर के वे स्कंभसर्जनी हैं. व्रियते वेष्टन किया जावे अर्थात् लपेटा जावे वस्त्रादि से सो वरुण यहां वरुण शब्द से वस्त्र से ढँका सोम ग्रहण किया जाता है. वरुणजी इसके देवता हैं बैठक की प्रार्थना कि—हे आसंदी ! तू (वरुणस्य ऋतसदन्यसि) वरुणजी की ऋतसदनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है. ऋताय—यज्ञ के लिये सद्यते—बैठा जावे जिसमें सो ऋतसदनी अर्थात् तू यज्ञसिद्धि के लिये बैठने की ठौर भई है फिर तिसमें कृष्ण मृगचर्म बिछाते हैं कि—(वरुणस्य ऋतसदनमसि) हे मृगचर्म ! तू ऋताय—यज्ञ के लिये सदनं बैठने का बिछौना है. तिससे सोम को विराजमान करता है. कि—(त्वं वरुणस्य ऋतसदनमासीद) हे सोम ! तू यज्ञ की उत्तम बैठक में बिछाये मृगचर्म में सुख से विराज. इस मंत्र से वरुणजी की प्रार्थना करै, पूजा करै ॥ २ ॥ (ब्रह्म) आदित्यस्वरूप तेज (पुरस्तात्) पहिले अर्थात् पूर्व दिशा में (जज्ञानं) जाने जाते अर्थात् उदय होते हैं. फिर (विसीमतः) विशेषसीम से अर्थात् मध्यस्थान से इन लोकों को (विवः) आवरण कर के ढाँकते अर्थात् निज तेज से आच्छादित करते हैं । कैसा मध्यस्थान (सुरुचः) सुंदर रुचिमान् । कैसे हैं सूर्य्य (वेन) मेधावी. अरु वही आदित्यजी (बुध्न्या) तप कर के दिशाओं को प्रकाशित करते हैं और (अस्य) इस जगत की (विष्ठा)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी के ऐसी (उपमा) जिसमें सब उपमा किये जावें अर्थात् सबसे अधिक ऐसी वह (सतः) मूर्तिमान्—घटिकादिक अरु (असतः) अमूर्तिमान् आकाशादिक (योनि) स्थान को विवरण अर्थात् प्रगट करते हैं. तिससे आदित्यजी ही सब के प्रकाशक हैं. यह अर्थ भया. पर विनियोग बल से इस मंत्र कर के ब्रह्माजी की ही पूजा होती है अरु प्रमाण पूछै तो यह है कि (उदये ब्रह्मणो रूपं मध्याह्ने तु महेश्वरः । अस्तमाने स्वयं विष्णुस्त्रिमूर्तिर्हि दिवाकरः) अर्थात् यही सूर्यजी उदय में तो ब्रह्मरूप अरु मध्याह्नमें महेश्वररूप हैं अरु अस्तसमय आप ही विष्णु ऐसे यह दिनकरजी तीन मूर्तिधारी हैं इससे यह पक्ष निर्विवाद है ॥ ३ ॥ इस मंत्र कर के यजमान यज्ञशाला की राटीनाम बंदियों के बंधन का स्पर्श करता है। केतू (विष्णोरराटमसि) विष्णुजी का रराट नाम ललाट है. यहां रल की सवर्णता से रराट ललाट एक ही है. (विष्णोःश्नप्त्रेस्थः) तुम विष्णुजी की पक्ष्म (पलक) हो। जिससे यज्ञशाला का मंडप

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बांधा जाता है तिसे कहते हैं. (विष्णोःस्यूरसि) विष्णुजी तंतुप्रबंधक हैं (गांठ देते) हैं कि तू (विष्णोर्ध्रुवो ऽसि) विष्णु का निश्चल–ग्रंथि है. पूरेभये अग्रभाग का स्पर्श करता है. तू (वैष्णवमसि) विष्णुदेवता का अर्थात् विष्णुजी ही तुम्हारे देवता हैं, इससे (विष्णवे त्वा) विष्णुजी के निमित्त तुम्हारा स्पर्श करते हैं ॥४॥ अब नवग्रहों के मंत्र कहते हैं. (सविता) आदित्यजी (आयाति) आते हैं, कैसे सूर्य कि (देवः) दीप्तिक्रीड़ादिसंयुक्त हैं । किससे आते हैं कि (रथेन) रथ पर चढ़ कर के, कैसे रथ से कि–(हिरण्मयेन) हिरण्मय अर्थात् सुवर्ण से बनाये भये से. क्या करते आते हैं ? कि–(भुवनानि पश्यन्) भुवनों में रहनेवाले लोगों को देखते भए अर्थात् पुण्य पाप करते जनों के शान्तिरूप भए तिनको देखते भए. केवल यही नहीं किन्तु (अमृतं) देवों को यहां जातित्व से एक वचन है अरु (मर्त्यं) मनुष्यों को (निवेशयन्) निरंतर प्रविष्ट करते अर्थात् जनों को निजव्यापारों में प्रवर्तमान कराते अर्थात् मनुष्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूर्योदय ही से यज्ञादिकों कर के देवताओं को तृप्त करते हैं. फिर कैसे सविताजी हैं कि—(अवर्तमानः) फिर उसी देश को आते भए. क्या कर के किं—(रजसा) मैळे अर्थात् रात्रि समय से कैसा समय कि—(आकृ-ष्णेन) आ (कुछ) काला तिस कर के यह अर्थ भया. इस मंत्र से सर्यजी की पूजा नमस्कार करै ॥१॥

इमन्देवेति। यह मंत्र यजमानदैवत अत्यष्टि छन्द है । (देवाः) हे देवो! आप (इमम्) इस चन्द्रमा को (असपत्नम्) सपत्नैः शत्रुओं से रहित (सुवध्वम्) उत्पन्न करते भए ? किस लिये (महते क्षत्राय) महती भारी क्षत्रपदवी के लिये. (महते ज्यैष्ठ्याय) महा ज्येष्ठपन अर्थात् बड़ापन के लिये (महते जान-राज्याय) जनोंका जो यह सो जान सो राज्य सो जानराज्य तिसके अर्थ अर्थात् जनों के धिपतित्वके लिये. (इंद्रस्य) आत्मा के (इन्द्रियाय) वीर्य के लिये अर्थात् आत्मज्ञानसामर्थ्य के अर्थ (इमम्) चन्द्रमा को कैसे इसको (अमुष्य पुत्रं) सूर्य के पुत्र को, सूर्य की किरणों से चन्द्रमा की वृद्धि होनें से चन्द्रमा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूर्य का पुत्र कहलाता है. तथा (अमुष्यै पुत्रं) यहां षष्ठी के अर्थ में चतुर्थी विभक्ति भई है अर्थात् पूर्वदिशापुत्र को अर्थात् (अस्यैविशे) प्रजा के अनुग्रह अर्थात् अमृत सूर्य की उत्पत्ति के लिये (अमी) हे कुरु पाञ्चालदेशवाले! (एष) यह (सोमः) चन्द्रदेव तुम्हारा और (अस्माकम्ब्राह्मणानां) हमारा ब्राह्मणों का राजा है ॥ २ ॥ इस मंत्र से चन्द्रमा का पूजन नमस्कार करै । अग्निर्मूर्धेति । यह अग्नि (अपांरेतासि जिन्वति) साररूप कर के जलबलजन्य यवतंडुलादिकों को (जिन्वति) प्रीतिकर्ता अर्थात् पकाता वृद्धि करता है । अपां जलों के (रेतांसि) कारणों को (जिन्वति) पुष्टकर्ता अर्थात् आहुति देने से वर्षा करता है। कैसा है अग्नि (दिवोमूर्द्धा) द्यु आकाश समान ऊंचे मस्तकवाला । जैसे शिर शरीर के ऊपर ही रहता है तैसे ही यह अग्नि द्दिन में सूर्य के मध्यप्रवेश होने से सूर्यरूप कर के आकाश के ऊपर रहती है । तैसे ही (ककुत्) यह शब्द पीठ की ऊँचाई के अङ्ग अर्थात् थोबड़े का वाचक है । सो जैसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थोबड़ा शरीर के ऊपर तैसे ही यह भी सूर्यरूप के सब के ऊपर स्थित होने से ककुत् सरीखा है। सो तथा (पृथिव्याः पतिः) पृथ्वी का पालक है. क्योंकि जरना, पकाना, प्रकाश करना इन कर के भूमिलोकवालों का उपकारक है ॥ ३ ॥ इस मंत्र से मङ्गलजी का पूजन, नमस्कार कर के । उद्बुद्ध्यस्वाग्ने इति–हे (अग्ने) तुम (उद्बुध्यस्व) उद्बोध को प्राप्त होओ अर्थात् सावधान हो अरु इस यजमान को भी (प्रतिजागृहि) प्रतिदिन जगानेवाला अर्थात् सावधान करो । फिर (इष्टापूर्ते) श्रौतस्मर्तकर्म यजमान से रचे जावें अर्थात् तुम्हारे प्रसाद से यह यजमान इष्टापूर्त कर्म रचै. फिर (विश्वेदेवाः) हे विश्व के देवता! तुम अरु किये इष्टापूर्त जिसने ऐसा यह यजमान (सधस्थे) देवों के साथ स्थितियोग्य अरु (उत्तरस्मिन्) सब से उत्कृष्ट इस सूर्यलोक में (अधिसीदत) चिरकाल विराजिये (द्यौर्वा उत्तरं सधस्थं) यह श्रुति प्रमाण है. इस मंत्र कर के विश्वेदेवों से यजमान की सलोकता अर्थात् मुक्तिप्रार्थना की जाती है ॥ ४ ॥ बृहस्प-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सब० तेति—यह ब्रह्मदैवत त्रिष्टुप्छन्द गृत्समदऋषि की ऋचा है. बृहस्पतिसम्बन्धी कर्म करने में उपमा सहित पू०वि०
६ इसका विनियोग है. (ऋतात्) सत्यब्रह्म के सकाश से (प्रजात) (प्र) प्रकृष्ट (जात) जन्म जिसका सो ऋतप्रजात है. (बृहस्पते) बृहतां वेदों के (पते) पालक ! (चित्र) नानाविध जो (द्रविणं) धन सो (अस्मासु) हमारे में (धेहि) धरो अर्थात् देओ, सो क्या कि (अर्य्यः) स्वामी (अर्हात्) पूज्य अर्थात् योग्य "अर्य्यः स्वामिवैश्ययोः" यह कोश है. तिससे क्या कि हम को ईश्वर योग्य धन देओ. जो धन (जनेषु) जनों में (विभाति) विशेष शोभित होता है. कैसा धन कि—(द्युमत्) द्यौः (कांति) जिसमें हो सो द्युमत् "दिवउच्च" इस सूत्र से वकार के उकार भया फिर (ऋतुमत्) यज्ञोंवाला अर्थात् जिससे यज्ञ किये जावें तैसा धन देओ. फिर जो धन (शवसा) बल से (दीदयत्) दापयति—दिवावै अर्थात् धन प्राप्त करावै तैसा धन देओ. "दयधातु" देने, लेने, गति, हिंसा इन अर्थों में है. तैसी णिच्प्रत्ययान्त ६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोलुङ्लकार में यह प्रयोग सिद्ध भया ॥५॥ इस मंत्र से बृहस्पतिजी को पूजै. अन्नादिति ॥ यह अति-जगती छन्द है. (प्रजापति) प्रथम शरीरी आर्थात् ब्रह्मा ने (परिस्रुतः) गीले अन्न से गायत्रीरूप हो के (रसम्) सार को (व्यपिवत्) पिया । अरु (क्षत्रम्) पिया अर्थात् क्षत्रिय को वश किया क्षत्रिय का पीना वश करना है ।अरु (पयः सोमम्) दुग्ध अमृत को पिया । (ऋतेन) सत्यब्रह्म से (विपानमिन्द्रियम्) जिसमें विशेष पिया जाय सो इन्द्रिय (शुक्रं) वीर्य्य (अन्धसः) अन्न (इन्द्रस्येंद्रियम्) आत्मज्ञान अरु (इदम्पयो ऽमृतम्मधु) ये दुग्ध, अमृत, मधु सब सत्य अर्थात् यथार्थ सवाद देनेवाले हो रहे हैं ॥६॥ शन्नोदेवीरिति । यह जलदैवत गायत्री छन्द है. (देवीः) दीप्यमान कान्तिमान् (आपः) जल (नः) अस्माकं (हमारे) (अभिषेक के लिये) भवन्तु (होओ) (पीतये) पानाय पीनेकें लिये या (शं) सुख के लिये (अभिस्रवन्तु) सम्मुख गिरो. अर्थात् वर्षा से शुद्ध जल हमको सदा मिलै ॥ ७ ॥ शनिजी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

को नमः। कयानइत्यादि—येतीन मंत्र गायत्री छन्द इन्द्रदैवत वामदेवऋषिवाले हैं एकाधिक सात अक्षर का एक पाद ऐसे ऐसे त्रिपादवाले ये हैं. अरु पूर्वऋचा से (इन्द्र) यह पद यहा जोड़ा जाता है सो कि । इन्द्र (कया) किस (ऊती) ऊत्यारक्षा करने तृप्त करनेवा प्रसन्न करने से (नो) हमारा (सखा) सहायी (आभुवत्) अभवत् सन्मुखपने से होता है तैसे (वृता) वर्त सो वृत तिस अर्थात् वर्तमान (शचिष्ठया) अतिशयवाली क्रिया सहित हमारा सखा होता है. शची यह कर्म का नाम है. तिससे छन्-प्रत्यय भया. कैसा इन्द्र कि (सदावृधः) सदा बढ़ै सो सदावृधः यहां "इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः" इस सूत्र से कप्रत्यय भया. ऊती यह तृतीया का एक वचन है ॥८॥ इससे राहु को पूजै नमस्कार करै। केतुं कृण्वन्—यह त्रिपद गायत्रीछंद है. हे अग्ने ! त्वं (उषद्भिरजायथाः) उष जलाने में उषैं हव्य जलावैं सो उषन्तः होम करनेवाले तिनसे सम्यक् अजायथाः तुम उत्पन्न भये हो. क्या करते कि ? (मर्य्या) मर्य्याय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मनुष्य के अर्थ कैसा मनुष्य कि—अकेत अज्ञानी है तिसको यह [अर्थ] (केतुंकृण्वन्) ज्ञान बताते । अरु (अपेशसे) पेश—सुवर्णरहित को (पेशः) सुवर्णसहित अर्थात् द्रव्यवान् करते हो ॥ १ ॥ इति महीधरकृते-वेदप्रदीपभाष्यादिगूंथानुसारतः शुक्लसरस्वतीदेवीसहायेन संगृहीतोगणपत्यादिमंत्रार्थः समाप्तः ॥ शुभं मिती पौषशुक्लपंचम्या भौमे प्रातस्समये संवति च १९६१ सर्वेषासुखार्थंकरोतु श्रीः ॥ ओम् भारत्यै नमः ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथ सत्यनारायण की पूजाका विधान कहते हैं। व्रतकरनेवाला मनुष्य संक्रांति वा पूर्णमासी को, अमावस को तथा एकादशी को, अथवा जिस किसी दिन अर्थात् जब श्रद्धा सहित स्वस्थ मन होवे तभी संध्या-

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ व्रतविधिर्लिख्यते ॥ व्रती संक्रान्तौ पौर्णमास्यां चैकादश्यां यस्मिन्कस्मिन्दिने वा सायंकाले स्नानंकृत्वा पूजास्थानमागत्य आसने उपविश्याचम्य पवित्रधारणंकृत्वा गणेशगौरीवरुणदेवतानां प्रतिष्ठावाहनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि० अमुकगोत्रो ऽमुकशर्माहं

समय में स्नान करके पूजा के स्थान में आकर, आसन पर बैठ आचमन कर, पवित्री पहिर के, गणेश, गौरी, वरुण इन देवाताओं की प्रतिष्ठा और आवाहन करके संकल्प करै कि—अमुक गोत्र अमुक नामवाला मैं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सब पापों का नाश और सब दुःख की शांति के अर्थ सारे मनोरथों का सिद्धि के लिये यथायोग्य सम्पादन किया (और लाई गई) सामग्री से गणेश, गौरी, वरुणदेवता गणपति आदि अर्थात् १गणेश, २ आंबिका,

सकलदुरितोपशमनसर्वापच्छांतिपूर्वकसकलमनोरथसिद्ध्यर्थं यथासम्पादितसामग्रीभिः गणेशगौरीवरुणदेवतागणपत्यादिपंचलोकपालदेवतासूर्यादिनवग्रहदेवतापूजनपूर्वकं पूर्वाङ्गीकृतं श्रीसत्यनारायणपूजनं तत्कथाश्रवणमहं करिष्ये ॥ गणेशादिभ्यो नमः अर्घ्यपाद्याचमनीयमुखवासतां-

३वायु, ४आकाश, ५अश्विनीकुमार ये, पंचलोकपाल देवता सूर्यआदि नवग्रह देवता इनका पूजन करके पूर्व अंगीकार किया (भया) सत्यनारायणपूजन और कथाश्रवण करूंगा गणेशआदिकों के अर्थ नमस्कार है ऐसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्घ, पाद्य, आचमनीय, मुखसुगंधि कारक ताबूल, सुपारी, दक्षिणा ये तिन के मंत्रोंसे मैं समर्पण करता हूं. ऐसेही सूर्य आदि नवग्रहों का तिनके मंत्रों से पूजन करै ॥ अब सत्यनारायणपूजा का प्रकार कहते हैं ॥

बूलपूंगीफलद्रव्याणितत्तत्तैर्मंत्रैःसमर्पयामिः । एवं सूर्यादिग्रहणां तत्तत्तैर्मंत्रैः पूजयेयुः ॥ अथ सत्यनारायणपूजनप्रकारमाह ॥ पुष्पाणि गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात् ॥ ध्यायेत्सत्यं गुणातीतंगुणत्रयसमन्वितम्॥ लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम् ॥१॥ नीलवर्णं पीतवासं श्रीवत्सपदभूषितम्॥

फूल हाथ में लेकर, ध्यान करै. जो सत्यनारायणजी गुणोंसे परे अर्थात् निर्गुण हैं, माया करके तीनों गुण सहित प्रतीत होते हैं, और लोकस्वामी त्रिभुवन के ईश्वर, कौस्तुभमणि धारण किए, हरि, ॥१॥ नीलवर्ण है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिनका, पीतांबरपहिरे ऐसे सत्यनारायणस्वामी को, ध्याते हैं. लक्ष्मी और भृगुलातके चिन्हसे शोभित, गोविन्द, गोकुलको आनन्द करनेवाले, ब्रह्मादिकोंसे भी पूजित विष्णुजीका हम ध्यान करतेहैं ॥ २॥ ऐसे ध्यानभया ॥ हे

गोविंदंगोकुलानंदं ब्रह्माद्यैरपि पूजितम्॥ २ ॥ इति ध्यानम् ॥ नारायणनम-
स्तेऽस्तु नरकारणवतारक॥पाद्यंगृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥ ३ ॥
इति पद्याम् ॥ व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय हृषीकपतये नमः॥ मया निवेदितो
भक्त्या अर्घो ऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ४ ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ ॥ ॥

नारायण ! नरकसागर से तिरानेवाले ! आपको नमस्कारहै. हे देवों के ईश्वर ! आप इस पाद्यको गृहण कीजिये और मेरे सुखको बढ़ाइये ॥ ३ ॥ ये पाद्य ॥ प्रत्यक्ष, गुप्तस्वरूप और इंद्रियोंके स्वामी ऐसे आपको नमस्कार है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सो आप मुझसे भक्तिकरके दिये इस अर्घको गृहण कीजिये ॥ ४ ॥ ये अर्घ्य ॥ ॥ ॥
जो गंगाजीका जल शुभ और सब पापहारक है. हे देवजी ! सो ये मुझ करके लायागया है. सो इससे सम्यकप्र-

मंदाकिन्यास्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभम्॥ तदिदं कल्पितं देव सम्यगाच-
म्यतां त्वया ॥५॥ इत्याचमनम् ॥ स्नानं पंचामृतैर्देव गृहाण पुरुषोत्तम॥
अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणप्रणतप्रिय ॥६॥ इति पंचामृतस्नानम्॥ गंगा च

कार से आप आचमन कीजिये ॥ ५ ॥ ये आचमन ॥ हे पुरुषोत्तम ! पंचामृतों से स्नान ग्रहण कीजिये. जो आप अनाथों के नाथ और सर्ववेत्ता देवतों के प्राणों के प्यारे अर्थात् तिनकी स्तुति से प्रसन्न होते हो ॥ ६ ॥ ये पंचामृतस्नान ॥ " हे सत्यदेव शुद्धोदक से स्नान कीजिये गंगा यमुना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोदावरि सरस्वती नर्मदा ासन्धु कावेरी नदियों के जो शुद्ध स्फटिक मणि के सदृश जल उसको स्नानार्थ गृहण कीजिये ॥ ७ ॥ और जो वेद के सूक्तोंसे संयुक्त और यज्ञ, सामवेदसे संयुक्त और

यमुनाचैव गोदावरी सरस्वती॥ नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्य-
ताम् ॥ ७ ॥ इति शुद्धोदकस्नानम् ॥ वेदसूक्तसमायुक्ते यज्ञसामसम-
न्विते ॥ सर्ववर्णप्रदे देव वाससीप्रातिगृह्यताम् ॥ ८ ॥ इति वस्त्रम् ॥
ब्रह्मविष्णुमहेशश्च निर्मितं ब्रह्मसूत्रकम् ॥ यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां

सुवर्णके तुल्य वर्ण देनेवाले अत्यंत पीले वस्त्र हे देव ! आप गृहण कीजिये ॥ ८ ॥ ये वस्त्र ॥ और जो ब्रह्मसूत्र ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन करेक बनाया अर्थात् इन तीनों क ध्यानपूर्वक गूंथि लगायागया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है ऐसें इस यज्ञोपवीतके देनेसे कमलाके पति सत्यनारायणस्वामी प्रसन्न होवें ॥ ९ ॥ ये जनेऊ भया ॥ जो चन्दन सुन्दर और सुन्दरही सुगंधिसे संयुक्त और सुन्दर मनोहर है सो हे सुरश्रेष्ठ ! लेपन चंदन

कमलापतिः ॥ ९ ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम् ॥ १० ॥ इति चंदनम् ॥ मल्लिकादिसुगंधीनी मालत्यादीनि वैप्रभो ॥ मया हृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ ११ ॥ इति पुष्पाणि ॥ वनस्पतिरसो-

को गृहण कीजिये ॥ १० ॥ और हे प्रभो ! सुगंधिसंयुक्त चँबेली आदि और मालती आदिकभी ये पुष्प मुझकरके पूजाके लिये लायेगये हैं. सो आप इन्हैं गृहण कीजिय ॥ ११ ॥ ये पुष्प भये ॥ जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वनस्पतियों के रस से उत्पन्न भया, व सुगंधि सहित उत्तम गंध है और सब देवों कर के सूंघने योग्य है ऐसा धूप आप गृहण कीजिये ॥ १२ ॥ यह धूप ॥ हे त्रिलोक का अन्धकार दूर करनेवाले

द्भूतोगंधाढयो गंधउत्तमः आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपो ऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१२॥ इति धूपम् ॥ साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निनायोजितं मया ॥ दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहं ॥ १३ ॥ इति दीपम् ॥ घृतपक्वं हविष्यान्नं पायसं च सशर्करम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

देवाधिदेव ! घी से भरी बत्ती सहित और अग्नि से युक्त अर्थात् जलाया गया ऐसा दीपक गृहण कीजिये ॥१३॥ यह दीप ॥ और हे विष्णुजी ! घृत से परिपक्व बनाया ऐसा पक्वान्न तथा शर्करा सहित पायस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात् मीठा मिली हुई खीर और भी अनेक प्रकार का नैवेद्य आप ग्रहण कीजिये ॥ १३ ॥ सब पापहारी यह जो दिव्य गंगाजी का निर्मल जल जो मैंने दिया आचमन सो हे श्रीपरमेश्वर ! आप

नानाविधं च नैवेद्यं विष्णोमे प्रतिगृह्यताम् ॥ १३ ॥ इति नैवेद्यम् ॥
सर्वपापहरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् ॥ आचमनं मया दत्तं गृह्यतां परमेश्वर ॥ १४ ॥ इत्याचमनम् ॥ एलादिचूर्णसंयुक्तं तांबूलं सुरपूजितम् ॥ प्रीत्या गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय ॥१५॥ इति तांबूलम्

लीजिये ॥१४॥ यह आचमन ॥ और लायची आदि सहित और देवताओं को प्रिय ऐसा जो ताम्बूल सो हे देव देवेश ! आप इसे प्रीति से मुखशुद्धि कीजिये. और मेरे सुख को बढ़ाइये ॥१५॥ यह ताम्बूल॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हे देवजी ! यह फल मैंने आप के आगे धरा है तिस से मुझ को जन्म जन्म में सुन्दर फल प्राप्ति हो ॥ १६ ॥ यह फल ॥ जो चौमुखा दीपक चार वत्ती सहित और गोघृत से पूरित है, ऐसे इस आरती से

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि
जन्मनि ॥ १६ ॥ इति फलम् ॥ चतुर्वर्तिसमायुक्तं गोघृतेन च पूरितम्॥
नीराजनेन सन्तुष्टो भवत्येवजगत्पतिः ॥१७॥ इति नीराजनम् ॥ यानि कानि
च पापानि जन्मांतरकृतानि च ॥ तानि सर्वाणि नश्यंति प्रदक्षिणपदंपदे १८

जगत के पति हे सत्यनारायणस्वामी आप प्रसन्न हो ॥ १७ ॥ जो कोई जन्म जन्मान्तर के किये हुए पाप हैं वे सब पाप इस प्रदक्षिणा के पद पद में नाश को प्राप्त होते हैं ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर पुष्पांजलि और नमस्कार कर के यह स्तुति करै कि, हे सत्यनारायण ! जो जो मैंने भक्ति कर के पत्र, पुष्प, फल, जल दिया है और नैवेद्य निवेदन किया है सो सब आप कृपा कर के ग्रहण

इति प्रदक्षिणा ॥ ततः पुष्पांजलिं नमस्कारांश्च कृत्वा प्रार्थयेत् ॥ यन्मया भक्तियोगेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकंपया ॥ १ ॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ अमोघं पुंडरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम् ॥ हृषी-

कीजिये ॥ १ ॥ और हे जनार्दन ! भक्तिहीन, क्रियाहीन, और मंत्रहीन हुआ जो पूजन सो हे देव मेरा आप की कृपा से परिपूर्ण होवे ॥ २ ॥ मैं सत्य और कमल नयन, नृसिंह, दैत्यहंता, हृषी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केश, जगत के नाथ, बाणी के ईश, बरदाता ॥ ३ ॥ जगत के अर्थ त्रिगुणात्मा और वस्तु से गुणरहित और गोविन्द, गरुडध्वजावाले, जनार्दन, जनानन्दि, जानकी के पति ऐसे जो हरि भगवान्

केशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम् ॥ ३ ॥ गुणत्रयं गुणातीतं गोविंदं गरुडध्वजम् ॥ जनार्दनं जनानन्दं जानकीवल्लभं हरिम् ॥ ४ ॥ प्रणमामि सदा भक्त्या नारायणमतः परम् ॥ दुर्गमे विषमे घोरे शत्रुभिः परिपीडिते ॥ ५ ॥ निस्तारयस्व सर्वेषु तथानिष्टभयेषु च ॥ नामान्येतानि

हैं ॥ ४ ॥ तिनको भक्ति कर के सदा प्रणाम करता हूं, सो आप शत्रुओं की पीड़ा सहित इस दुर्गम घोर विषम संसार में से ॥ ॥ ५ ॥ और तैसे ही सारे अनिष्ट भयों से मेरा निस्तार करो, इन नामों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के पढ़ने से वाछित फल प्राप्त होता है ॥ ६ ॥ कामदाता (मनोरथ के पर्ण करनेवाले) प्रभु सत्यनारायणस्वामी की मैं बंदना करता हूं, जिनकी लीला से यह विश्व संसार विस्तारित हो रहा है ।

संकीर्त्य ईप्सितं फलमाप्नुयात् ॥ ६ ॥ सत्यनारायणं देवं वंदेऽहं कामदं प्रभुम् ॥ लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमो नमः ॥ ७ ॥ इति प्रार्थना ॥ अथ कथा ॥ एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः ॥ पप्रच्छुर्मुनयः सर्वेसूतंपौराणिकंखलु ॥ १ ॥ वृतेनतपसाकिंवाप्राप्यतेवांछितंफलम् ॥ तत्स-

तिनके अर्थ बारंबार नमस्कार है ॥७॥ यह प्रार्थना भई ॥ अथ कथा वर्णन की जाती है ॥ एक समय नैमिषारण्य तपोवन में अट्ठासी हज़ार शौनकादिक ऋषियों ने श्रीसूतजी पौराणिक से पूछा ॥१॥ कि—हे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूतजी ! किस ब्रत करके अथवा तप करके मन का वाञ्छित फल प्राप्त होता है सो हम सब लोगों की आप के श्रीमुख से सुनने की इच्छा है आप कहिये ॥२॥ सूतजी बोले कि—ऐसे ही नारदजी से कमला-

वैंश्रोतुमिच्छामः कथयस्वमहामुने ॥ २ ॥ सूतउवाच ॥ नारदेनैवसंपृष्टो-
भगवान्कमलापतिः ॥ सुरर्षयेयथैवाहतच्छृणुध्वंसमाहिताः ॥ ३ ॥
एकदानारदोयोगीपरानुग्रहकांक्षया ॥ पर्यटन्विविधान्लोकान्मर्त्यलोक-
मुपागतः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥

पति भगवान् सुरश्रेष्ठ ने संसार क कल्याणार्थ जैसा कहा है सोई कथा तुम सावधान हो कर श्रवण करो॥३॥ कि एक दिन योगी नारदजी पराये अनुग्रह की इच्छा कर के अनेक भुवन में घूम के मृत्युलोक में आये॥४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संपूर्ण मनुष्यों को नाना प्रकार के क्लेशों से पीड़ित देख कर, व नाना योनियों में उत्पन्न और अपने नीच कर्मों के फल को भोग कर रहे हैं ऐसा देख महर्षि श्रीनारदजी अपने मनमें बिचारने लगे कि॥५॥

ततो दृष्ट्वाजनान्सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान् ॥ नानायोनिसमुत्पन्ना न्क्लिश्यमानान्स्वकर्मभिः ॥ ५ ॥ केनोपायेनचैतेषांदुःखनाशोभवेद्ध्रुवम् ॥ इतिसंचिन्त्यमनसाविष्णुलोकंगतस्तदा ॥ ६ ॥ तत्रनारायणंदेवं- शुक्लवर्णंचतुर्भुजम् ॥

किस उपाय से इनका दुःख निश्चय नाश होवे ऐसा मन से निश्चय करके नारदजी उसी समय विष्णुलोक को गये ॥६॥ तहा नारायणदेव का दर्शन किया, वे नारायण कैसे हैं? कि श्वेतवर्ण जिनका और चतुर्भुज,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शंख, चक्र, गदा, पद्म, को धारण किये बनमाला करके शोभित ॥ ७ ॥ ऐसे जो देवदेवेश भगवान् तिनको देख नारदमहर्षि स्तुति करते भये कि, वाणी और मन से परे अग्राह्य अर्थात् नहीं ग्रहण किया जावे स्वरूप जिनका अर्थात् वाणी जिन्हें न कह सकै और मन जिनको जान न सकै और अगम्य

शंखचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितम् ॥७॥ दृष्ट्वातंदेवदेवेशंस्तोतुंसमुपचक्रमे ॥ नारदउवाच ॥ नमोवाङ्मनसातीतरूपायानन्तशक्तये ॥८॥ आदिमध्यांतहीनायनिर्गुणायगुणात्मने ॥ सर्वेषामादिभूतायभक्तानामार्तिनाशिने ॥९॥

शक्तिवाले आपको नमस्कार है ॥ ८ ॥ और जो आप आदि मध्य, अन्त इन तीनों अवस्थाओं से रहित हो, निर्गुण और भक्तों के अर्थ गुणात्मा हो (गुणों सहित अवतारादिक धारण करते हो) और सब के उत्पत्ति के कारण हो और भक्तों की आर्ति अवस्था के नाशक हो तिनको नमस्कार है ॥ ९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे भक्तियुक्त नारदमहर्षि के वचन सुनके नारद के प्रति भगवान् बोलते भये॥ कि हे मुने तुम किस अर्थसे आये हो क्या तुम्हारे मन में है सो कहो ॥१०॥ हे महाभाग हम तुम्हारे सब प्रश्नोंका उत्तर देंगे फिर नारदजी बोलते

श्रुत्वास्तोत्रंततोविष्णुर्नारदंप्रत्यभाषत॥ श्रीभगवानुवाच॥ किमर्थमागतोऽसित्वंकिंतेमनसिवर्तते ॥ १० ॥ कथयस्वमहाभागतत्सर्वंकथयामिते ॥

नारदउवाच ॥ मर्त्यलोकेजनाःसर्वेनानाक्लेशसमन्विताः ॥ नानायोनिसमुत्पन्नाःपच्यन्तेपापकर्मभिः ॥ ११ ॥ तत्कथंशमयेन्नाथलघूपायेनतद्वद॥

भये॥कि हे प्रभो मृत्युलोक में सब मनुष्य अनेक पीड़ासे पीड़ितहैं॥और अनेक योनि में उत्पन्न हो के अपने अनेक पापों का फल भोगते हैं ॥११॥ सो वो दुःख हे नाथ!छोटे ही उपाय से कैसे शांति को प्राप्त होवे ? सो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहिये। मैं सब सुनना चाहता हूं सो मेरे पर आप की कृपा होय तो कहिये ॥१२॥ श्रीभगवान् बोले—हे पुत्र! (नारद) सब संसार के उपकार की इच्छा कर के तुमने अच्छा पूछा है। जिस कर के मनुष्य मोह से छूट जाता

श्रोतुमिच्छामितत्सर्वंकृपास्तियदितेमयि ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥
साधुपृष्टंत्वयावत्सलोकानुग्रहकांक्षया ॥ यत्कृत्वामुच्यतेमोहात्तच्छृणुष्वव-
दामिते ॥ १३ ॥ व्रतमस्तिमहत्पुण्यंस्वर्गेमर्त्येचदुर्लभम् ॥ तवस्नेहान्मया
वत्सप्रकाशःक्रियतेऽधुना ॥ १४ ॥ सत्यनारायणस्यैकंव्रतंसम्यग्विधा-

है सो सुनो हम तुम से कहते हैं ॥ १३ ॥ कि एक महापवित्र व्रत है जो स्वर्ग और मनुष्यलोक में दुर्लभ है। हे पुत्र सो तेरे स्नेह से मैं प्रकाश करता हूं ॥ १४ ॥ कि मनुष्य सत्यनारायणजी का व्रत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सम्यक प्रकार से कर के, शीघ्र ही सुख भोग कर, फिर मोक्ष को प्राप्त होता है ॥ १५ ॥ तो भगवान्
के वचन को सुन कर मुनि नारदजी बोले। कि उसका क्या फल है ? और क्या विधान है ? और वह

नतः ॥ कृत्वासद्यःसुखंभुक्त्वापरत्रमोक्षमाप्नुयात् ॥ १५ ॥ तच्छ्रुत्वाभगव-
द्वाक्यंनारदोमुनिरब्रवीत् ॥ नारदउवाच॥ किंफलंकिंविधानंचकृतंकेनैवतद्-
व्रतम् ॥ १६ ॥ तत्सर्वंविस्तराद्ब्रूहिकदाकार्यंहितद्व्रतम् ॥ श्रीभगवानु-
वाच ॥ दुःखशोकादिशमनंधनधान्यप्रवर्धनम् ॥ १७ ॥

व्रत पहिले किसने किया है? ॥१६॥सो सब बिस्तार से कहिये। कि वह व्रत कब कर्त्तव्य है ? श्रीभ-
गवान् बोले कि—जो व्रत दुःख शोकादिकों को शान्त करनेवाला, धनधान्य की वृद्धि करनेवाला ॥१७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सौभाग्य संतति की वृद्धि करनेवाला, सर्वत्र विजयदाता है, सो ऐसे व्रत को मनुष्य जिस किसी दिन में भक्ति श्रद्धा से संयुक्त हो कर, ॥१८॥ ब्राह्मणों के और भाइयों सहित तथा धर्म में तत्पर

सौभाग्यसंततिकरंसर्वत्रविजयप्रदम् ॥ यस्मिन्कस्मिन्दिनेमर्त्योभक्तिश्र-
द्धासमन्वितः ॥ १८ ॥ सत्यनारायणंदेवंयजेच्चैवनिशामुखे ॥ ब्राह्मणैर्बां-
धवैश्चैवसहितोधर्मतत्परः॥१९॥ नैवेद्यंभक्तितोदद्यात्सपादंभक्तिसंयुतम् ॥
रंभाफलंघृतंक्षीरंगोधूमस्यचचूर्णकम् ॥ २० ॥ अभावेशालिचूर्णवाशर्करा

हो कर सायंकाल में सत्यनारायणजी की पूजा करै ॥ १९ ॥ और भक्ति सहित सवाई कर के नैवेद्य अर्पण करै केला का फल, घृत, दुग्ध और गेहूं का आटा ॥ २० ॥ जो गहूं नहीं हो तो साठी चावल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का आटा और गुड़, शक्कर, ऐसे सारे पदार्थ सवाई समेत इकट्ठे कर के भोग लगावै ॥ २१ ॥ और इष्ट जनों के साथ कथा श्रवण कर के ब्राह्मण को दक्षिणा देवै, फिर भाइयों सहित ब्राह्मणों को भोजन

चगुडंतथा ॥ सपादंसर्वभक्ष्याणिचैकीकृत्यनिवेदयेत् ॥ २१ ॥ विप्रायदक्षिणांदद्यात्कथांश्रुत्वाजनैःसह ॥ ततश्चबंधुभिःसार्धंविप्रांश्चप्रतिभोजयेत् ॥ २२ ॥ सपादंभक्षयेद्भक्त्यानृत्यगीतादिकंचरेत् ॥ ततश्चस्वगृहंगच्छेत्सत्यनारायणंस्मरन् ॥२३॥

करावै ॥ २२ ॥ भोग लगाये भये सवाई प्रसाद में से स्वयं भी भोजन करै, तत्पश्चात् भगवान् के सामने नृत्य गान इत्यादि करै, फिर सत्यनारायणस्वामी को स्मरण करता अपने घर में आवै ॥ २३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे करने से मनुष्यों की निश्चय कामना सिद्ध होती है, विशेष करके कलियुग में मृत्युलोक में इससे छोटी और उपाय कोई नहीं है ॥२४॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडेश्रीसत्यनारायण कथा के सरल देशीय

एवंकृतेमनुष्याणांवांछासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ विशेषतःकलियुगेनान्योपायो-ऽस्तिभूतले ॥ २४ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणकथायांप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सूतउवाच ॥ अथान्यत्सं प्रवक्ष्यामिशृणुध्वंमुनिसत्तमाः ॥ कश्चित्काशी-

भाषानुवाद दीपिका में प्रथम अध्याय पूरा भया ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

अ० दूसरेमें शतानंदद्विजका उपाख्यान वर्णन करते हैं ॥ सूतजी बोले कि हे शौनक ! अब मैं और वृत्तात

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्णन करताहूं, सो हे मुनिलोग सुनो कोई काशीपुरीमें ब्राह्मण शतानंद नामसे होता भया, जो अत्यंत निर्धन था ॥१॥ सो वह शतानंद क्षुधा तृषा से व्याकुल होकर, नित्यही भूमी पर भिक्षार्थ घूमता था, उस दुःखित शतानंद

पुरेग्रामेआसीद्विप्रोतिनिर्धनः ॥ १ ॥ क्षुत्तृड्भ्यांव्याकुलोभूत्वानित्यंबभ्राम-
भूतले ॥ दुःखितंब्राह्मणंदृष्ट्वाभगवान्ब्राह्मणप्रियः ॥ २ ॥ वृद्धब्राह्मणरूप-
स्तंपप्रच्छद्विजमादरात् ॥ किमर्थंभ्रमसेविप्रमहींनित्यंसुदुःखितः ॥ ३ ॥
तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिकथ्यतांद्विजसत्तम ॥ ब्राह्मणोऽतिदरिद्रोऽहंभिक्षार्थंवै-

को देखकर, ब्राह्मणों के प्यारे भगवान् ॥२॥ वृद्ध ब्राह्मण का स्वरूप धर, उस शतानंद द्विज से आदर पूर्वक पूछते भए कि—हे विप्र ! अत्यंत दुःखित तू नित्य इस भूमि में क्यों घूमते हो ? ॥३॥ सो हे द्विजश्रेष्ठ ! वह सब कहो हम सुना चाहते हैं, तब ब्राह्मण देवता बोले कि—मैं अत्यंत दरिद्री ब्राह्मण हूं, भिक्षा मागने के लिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूमि में भ्रमण करता हूं ॥४॥ हे प्रभो ! जो आप दरिद्र दूर होने की कोई उपाय जानते हों तो कृपा कर के कहो, वृद्धब्राह्मणरूप भगवान् बोले कि—सत्यनारायण भगवान् मन वांछित के प्रदाता हैं ॥५॥ सो हे विप्र ! तू

भ्रमेमहीम् ॥४॥ उपायंयदिजानासिकृपयाकथयप्रभो ॥वृद्धब्राह्मणउवाच॥
सत्यनारायणोविष्णुर्वांछितार्थफलप्रदः ॥ ५ ॥ तस्यत्वंपूजनंविप्रकुरुष्व
व्रतमुत्तमम् ॥ यत्कृत्वासर्वदुःखेभ्योमुक्तोभवतिमानवः ॥६॥ विधानंचव्रत
स्यापिविप्रायाभाष्ययत्नतः ॥ सत्यनारायणोवृद्धस्तत्रैवांतरधीयत ॥ ७ ॥

उनका पूजन और उत्तमव्रत करो, जिसके करनेसे मनुष्य संपूर्ण दुःखोंसे छूट जाता है ॥६॥ फिर भगवान् वृद्ध-ब्राह्मणरूप सत्यनारायणस्वामी इस शतानंद को इस व्रत की विधि भी बता करके वहांही अलक्ष होगए ॥७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तबतो उस शतानंदने यह विचार किया कि यह व्रतको मैंअवश्यही करूंगा जो वृद्धब्राह्मणजीने मुझे बतायाहै, ऐसा विचारकें वह रातभर निद्राको प्राप्त न भया॥८॥फिर वह द्विज (शतानंद) प्रातःकालही उठकर, सत्यनारायणव्रत

तद्व्रतंतुकरिष्यामियदुक्तंब्राह्मणेनवै ॥ इतिसंचिंत्यविप्रोऽसौरात्रौनिद्रांन लब्धवान् ॥ ८ ॥ ततःप्रातःसमुत्थायसत्यनारायणव्रतम् ॥ करिष्य इतिसंकल्प्यभिक्षार्थमगमद्द्विजः ॥ ९ ॥ तस्मिन्नेवदिनेविप्रःप्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् ॥ तेनैवबन्धुभिःसार्धंसत्यस्यव्रतमाचरत् ॥ १० ॥

को करूंगा ऐसा संकल्प(मनसे दृढ़ प्रतिज्ञा) करके, भिक्षाकें लियेगया॥ ९ ॥ तो उसी दिन वह विप्र बहुतसे द्रव्य को प्राप्तभया, तो उसीद्रव्यके सामग्रीसें भाईबंधुवों के साथ सत्यनारायणजीके व्रतका आचरण करता भया॥१०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो इस सत्यनारायणव्रत के प्रभावसे वह विप्रवर्य सब दुःखोंसे रहित और सब संपत्तियोंसे संयुक्त भया ॥११॥ फिर उसी समय से शतानन्द ब्राह्मण ने महीने महीने में उस सत्यनारायणव्रत को करता भया। ऐसेही वह

सर्वदुःखविनिर्मुक्तःसर्वसंपत्समन्वितः ॥ बभूवसद्विजश्रेष्ठोव्रतस्यास्यप्रभा
वतः ॥ ११ ॥ ततःप्रभृतिकालंचमासिमासिव्रतंकृतम् ॥ एवंनारायणस्ये
दंव्रतंकृत्वाद्विजोत्तमः ॥ १२ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तोदुर्लभंमोक्षमाप्तवान् ॥
व्रतमस्ययदाविप्रपृथिव्यांसंचरिष्यति ॥ १३ ॥ ॥ ॥

ब्राह्मणोत्तम शतानंद इस सत्यनारायण का व्रत को कर के ॥१२॥ सब पापों से छूट कर दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त होता भया। सो हे विप्र नारदजी ! जब मनुष्य पृथ्वीपर इस सत्यनारायणव्रतको विधिसे करेंगे ॥१३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तभी उस मनुष्यका सब दुःख दूर होगा। ऐसा यह व्रत नारायणने महात्मा नारदजी से कहा है ॥१४॥ सोई हे ब्राह्मणो! हमने तुमसे कहा। अब हम तुमसे और क्या कहें? सो कहो। ऋषीश्वर बोले कि—हे मुनि सूतजी!

तदैवसर्वदुःखंचमनुष्यस्यविनश्यति ॥ एवंनारायणेनोक्तंनारदायमहात्मने ॥ १४ ॥ मयातत्कथितंविप्राःकिमन्यत्कथयामिवः ॥ ऋषयऊचुः ॥ तस्माद्विप्राद्व्रतंकेनपृथिव्यांचरितंमुने ॥ तत्सर्वंश्रोतुमिच्छामःश्रद्धास्माकंप्रजायते ॥ १५ ॥ सूतउवाच ॥ शृणुध्वंमुनयःसर्वेव्रतंयेनकृतंभुवि ॥ ॥

फिर उस ब्राह्मणसे वह व्रत पृथ्वी पर किसने सुनके किया हम यह सब सुनना चाहते हैं। क्योंकि हमको श्रद्धा उत्पन्न होती है ॥१५॥ सूतजी बोले कि—हे संपूर्ण मुनियो सुनो कि जिसने भूमि में फिर सत्यनारायण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

का व्रत किया है। एक समय वही ब्राह्मणश्रेष्ठ शतानंद यथा विभव विस्तार से॥ १६॥ भाई और निज जनों के साथ उस व्रतको यथा विधि करते थे। इतनेही में एक काष्ठ बेचनेवाला(लकड़िहारा)वहां आता भया ॥१७॥

एकदासद्विजवरोयथाविभवविस्तरैः ॥१६॥ बंधुभिःस्वजनैःसार्धंव्रतंकर्तुंसमुद्यतः ॥ एतस्मिन्नंतरेकालेकाष्ठक्रेतासमागमत् ॥१७॥ बहिःकाष्ठंचसंस्थाप्य विप्रस्यगृहमाययौ ॥ तृष्णयापीडितात्माचदृष्ट्वाविप्रंकृतव्रतम् ॥१८॥ प्रणिपत्यद्विजंप्राहकिमिदंक्रियतेत्वया ॥ कृतेकिंफलमाप्नोतिविस्तराद्वदमेप्रभो॥

सो वह लकड़ी बाहर रख के ब्राह्मण के घर में आया तो प्यास से व्याकुल जीव जिसका ऐसा यह लकड़िहारा ब्राह्मण को व्रत करते देख कर ॥ १८ ॥ ब्राह्मण को प्रणाम कर के बोला कि—आप क्या कर रहे हो ? और इस के किये से क्या फल मिलता है ? सो हे विप्र विस्तार पूर्वक हमसे कहिए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥१९॥ विप्र बोले कि—ये सब वांछितप्रदाता सत्यनारायण का व्रत करते हैं उन्हीं के प्रसन्नता से हमे ये सब धन धान्यादिक महा ऐश्वर्य प्राप्त भया है ॥२०॥ तो वह लकड़िहारा उस ब्राह्मण से इस व्रत को जान के

॥१९॥विप्रउवाच॥सत्यनारायणस्येदंव्रतंसर्वेप्सितप्रदम्॥तस्यप्रसादान्मे सर्वंधनधान्यादिकंमहत् ॥२०॥ तस्मादेतद्व्रतंज्ञात्वाकाष्ठक्रेतातिहर्षितः॥ पपौजलंप्रसादंचभुक्त्वासनगरंययौ ॥२१॥ सत्यनारायणंदेवंमनसाइत्यचिंतयत् ॥ काष्ठंविक्रयतोग्रामेप्राप्यतेचाद्ययद्धनम् ॥ २२ ॥ ॥

अत्यन्त प्रसन्न भया और प्रसाद भोजन करके जल पीकर नगर में गया ॥२१॥ और सत्यनारायणस्वामी का चिन्तन करता मन से यह विचारता भया कि—गावँ में लकड़ियाँ बेचने में जो हमको धन मिलैगा॥२२॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी धनसे सत्यनारायणदेवजी के उत्तम व्रत पूजा सहित करूंगा, ऐसे मनसे विचार कर और काष्ठ के बोझा को माथेपर धरकर ॥२३॥ रमणीय नगरमें गया; कि जहां धनवानों की बस्ती रही उस दिन उसने लकड़ियों

तेनैवसत्यदेवस्यकरिष्येव्रतमुत्तमम् ॥ इतिसंचिन्त्यमनसाकाष्ठंकृत्वातुमस्तके ॥ २३ ॥ जगामनगरेरम्येधनीनांयत्रसंस्थितिः ॥ तद्दिनेकाष्ठमूल्यंच द्विगुणंप्राप्तवानसौ ॥ २४ ॥ ततःप्रसन्नहृदयःसुपक्वंकदलीफलम् ॥ शर्करा घृतदुग्धंचगोधूमस्यचचूर्णकम् ॥ २५ ॥ कृत्वैकत्रसपादंचगृहीत्वास्वगृहं

का दाम दूना पाया ॥२४॥ तब वह प्रसन्नमन भया सुंदर पक्का केलेका फल, शक्कर, घृत, दुग्ध और गेहूं का आटा ॥ २५ ॥ ये (सब चीजें) सवाई समेत इकट्ठा कर के, लेकर अपने घरको आया, फिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भाइयोंकों बुलाकर यथाविधि से व्रत पूजा कथा श्रवण किया॥२६॥तो उस व्रतके प्रभाव से धन व पुत्रों से संयुक्त भया और इस लोक में अनेक सुख भोग के, अंतकाल में सत्यपुर (वैकुंठलोक) को चला गया॥२७॥

ययौ ॥ ततोबंधून्समाहूयचकारविधिनाव्रतम् ॥ २६ ॥ तद्व्रतस्यप्रभावेन धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वाचांतेसत्यपुरंययौ ॥ २७ ॥
इतिश्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायांद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

इति श्रीस्कंदपुराण रेवाखण्ड की सत्यनारायणके सरल देशीय भाषानुवाद दीपिका में काष्ठक्रेता वर्णन इस नाम से अध्याय द्वितीय भया ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अ० ३ में साधु बनिया के प्रसंग का वर्णन होता है । सूतजी बोले कि—फिर हम अगाड़ी वृत्तांत वर्णन करते हैं हे ऋषिश्रेष्ठो ! आप सब श्रवण करो, पहिले एक उल्कामुख नाम राजा रहा ॥ १ ॥

सूतउवाच ॥ ॥ पुनरग्रेप्रवक्ष्यामिश्रृणुध्वंमुनिसत्तमाः ॥ पुराचोल्कामुखो नामनृपश्चासीन्महामतिः ॥ १ ॥ जितेंद्रियःसत्यवादीययौदेवालयंप्रति ॥ दिनेदिनेधनंदत्वाद्दिजान्संतोषयत्सुधीः ॥ २ ॥ भार्यातस्यप्रमुग्धाचसरो जवदनासती ॥ भद्रशीलानदीतीरेसत्यस्यव्रतमाचरत् ॥ ३ ॥ एतस्मिन्नं

वह राजा जितेंद्रिय व सत्यवादी था तथा देवस्थान में जाता था और वह सुबुद्धिमान् राजा ब्राह्मणों को नित्य धन देकर, प्रसन्न करता था ॥ २ ॥ उसकी कमल सरीखे मुखवाली और पतिव्रता प्रमुग्धा नाम भार्या थी, सो वह राजा भद्रशीला नदी के तीर पर सत्यनारायणजी का व्रत करता था ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इतनेही में वहां एक साधुनाम बनिया चला आया; जो वाणिज्य के लिये अनेकानेक प्रकार के बहुत से सौदागरी माल करके भरी भई ॥४॥ नाव को नदी के तट पर लगा कर, राजा के पास गया और

तरेतत्रसाधुरेकःसमागतः ॥ वाणिज्यार्थंबहुधनैरनेकैःपरिपूरितः ॥ ४ ॥
नावंसंस्थाप्यतत्तीरेजगामनृपतिंप्रति ॥ दृष्ट्वासव्रतिनंभूपंपप्रच्छविनया
न्वितः ॥ ५ ॥ ॥ साधुरुवाच ॥ किमिदंकुरुषेराजन्भक्तियुक्तेनचेतसा ॥
प्रकाशंकुरुतत्सर्वंश्रोतुमिच्छामिसांप्रतम् ॥ ६ ॥ ॥ ॥

उस व्रती राजा को देखकर नम्रतायुक्त हो, यह पूछने लगा ॥५॥ बनिया बोला कि—हे राजन्! आप भक्तियुक्त चित्त से यह क्या कर रहे हो? सो सब कृपा करके प्रकाश करिये मेरी सुनने की इच्छा है ॥६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राजा बोला कि—हे साधुवैश्य! हम यह अतुल तेजवाले विष्णुजी का पूजन करते हैं और निजजनों के साथ उनका व्रत भी पुत्रादिक के प्राप्ति कामना करके करते हैं॥७॥ तब राजा का यह वचन सुन, साधुवैश्य आदर

राजोवाच ॥ पूजनंक्रियतेसाधोविष्णोरतुलतेजसः ॥ व्रतंचस्वजनैःसार्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया ॥ ७ ॥ भूपस्यवचनंश्रुत्वासाधुःप्रोवाचसादरम् ॥ सर्वंकथयमेराजन्करिष्येऽहंतवोदितम् ॥८॥ ममापिसंततिर्नास्तिएतस्मा-ज्जायतेध्रुवम् ॥ ततोनिवृत्त्यवाणिज्यात्सानंदोगृहमागतः ॥ ९ ॥ ॥

सहित बोला कि हे राजन्! हम से ये सब विधि कहो। मैं भी आपका सब कहा करूंगा॥८॥मेरेको भी संतति नहीं है सो इसके प्रभाव से निश्चयही होगी फिर वह बनिया निज व्यापार से लौट कर आनंदसहित घर आया॥९॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और वह सारा संतानदाता सत्यनारायणव्रत का वृत्तांत अपनी स्त्री को सुनाता भया और कहा कि मैं तब व्रत करूंगा जब मेरे संतान होगा ॥१०॥ ऐसे वह श्रेष्ठ साधुवैश्य अपनी पत्नी लीलावती से कहत।

भार्यायैकथितंसर्वंव्रतंसंततिदायकम् ॥ तदाव्रतंकरिष्यामियदामेसंततिर्भवेत् ॥ १० ॥ इतिलीलावतींप्राहस्वपत्नींसाधुसत्तमः ॥ एकस्मिन्दिवसे तस्यभार्यालीलावतीसती ॥ ११ ॥ भर्तृयुक्ताऽऽनंदचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा ॥ गर्भिणीसाऽभवत्तस्यभार्यासत्यप्रसादतः ॥१२॥ दशमेमासिवैतस्याः

भया, तो एक दिन उसकी पतिव्रता लीलावती पत्नी ॥ ११ ॥ भर्ता से संयुक्त, आनंदचित्तवाली, धर्म में परायण हुई सत्यनारायणजी की प्रसन्नता से गर्भवती होती भई ॥१२॥ फिर दशवें महीने में उसको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रत्नस्वरूपा कन्या जन्मी. सो वह दिन दिन ऐसी बढ़ी जैसे शुक्लपक्ष में चंद्रमा बढ़ते हैं॥ १ ३॥तब तो ब्राह्मणों ने कलावती इस नाम से उसका नामकरण किया अर्थात् नाम धरा फिर तो लीलावती अपने स्वामी से मधुर

कन्यारत्नमजायत॥दिनेदिनेसाववृधेशुक्लपक्षेयथाशशी॥१३॥ नाम्नाकला-
वतीचेतितन्नामकरणंकृतम्॥ ततोलीलावतीप्राहस्वामिनंमधुरंवचः ॥१४॥
नकरोषिकिमर्थंवैपुरासंकल्पितंव्रतम् ॥ साधुरुवाच ॥ विवाहसमयेत्वस्याः
करिष्यामिव्रतंप्रिये ॥१५॥ इतिभार्यांसमाश्वास्यजगामनगरंप्रति ॥ ततः

वचन बोली॥ १ ४॥कि पहिले संकल्प किया कि संतति होनेपर व्रत करेंगे अब व्रत तुम किस लिये नहीं करते हो? वैश्य बोलाकि—हे प्रिये ! इसके विवाह के समय में करेंगे॥१५॥ऐसे उस पत्नी को समझाय के नगर में

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निजकार्य के लिये चला गया. उसके बाद वह कलावती कन्या अपनें पिता के घर में बढ़ती भई ॥ १६ ॥ फिर तो धर्मज्ञाता वह वैश्य उस कन्या को सखियों के साथ समर्थ देखकर सलाह

कलावतीकन्याववृधेपितृवेश्मनि ॥ १६ ॥ दृष्ट्वाकन्यांततःसाधुर्नगरे सखिभिःसह ॥ मंत्रयित्वाद्रुतंदूतंप्रेषयामासधर्मवित् ॥ १७ ॥ विवाहार्थंचकन्यायावरंश्रेष्ठंविचारय ॥ तेनाज्ञप्तश्चदूतोऽसौकांचनंनगरंययौ ॥ १८ ॥ ॥ ॥ ॥

कर के शीघ्र ही एक दूत को भेजता भया कि ॥ १७ ॥ तुम इस कन्या के विवाह के लिये श्रेष्ठ वर ढूंढ़ो; ऐसा उससे आज्ञा किया तब वह दत कांचन नाम नगर को गया ॥ १८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और उस नगर में वह एक वैश्य पुत्र को लिवा के आया तब उस गुणी, सुन्दर, वैश्य पुत्र को देख कर, ॥ १९ ॥ जाति भाइयों के साथ प्रसन्न चित्त से साधु वैश्य उस श्रीमान् वैश्य पुत्र के अर्थ

तस्मादेकंवणिक्पुत्रंसमादायागतोहिसः ॥ दृष्ट्वातुसुन्दरंबालंवणिक्पुत्रंगु-
णान्वितम् ॥ १९ ॥ ज्ञातिभिर्बन्धुभिःसार्धंपरितुष्टेनचेतसा ॥ दत्तवान्सा-
धुपुत्रायकन्यांविधिविधानतः ॥ २० ॥ ततोभाग्यवशात्तेनविस्मृतंव्रतमु-
त्तमम् ॥ विवाहसमयेतस्यास्तेनरुष्टोऽभवत्प्रभुः ॥ २१ ॥ ॥

शास्त्र विधि से कन्या को देता भया ॥२०॥ उसके पीछे भाग्य के वश से उस कन्या के विवाह समय में भी, वह उस उत्तम व्रत को भूल गया, तब उस से प्रभु सत्यनारायण रोष को प्राप्त भये ॥२१॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर बहुत समय बीतने के बाद नियमयुक्त और निजकार्य में कुशल वह वैश्य वाणिज्य करने के लिये दामाद सहित जाता भया ॥ २२ ॥ समुद्र के समीप रमणीय रत्नसारपुर में जाकर, वहा वैश्य

ततः कालेननियतोनिजकर्मविशारदः ॥ वाणिज्यार्थंगतःशीघ्रंजामातृस-
हितोवणिक् ॥२२॥ रत्नसारपुरेरम्येगत्वासिंधुसमीपतः ॥ वाणिज्यमकरो-
त्साधुर्जामात्राश्रीमतासह॥२३॥तौगतौनगरेरम्येचंद्रकेतोर्नृपस्यच ॥ एत-
स्मिन्नेवकालेतुसत्यनारायणः प्रभुः॥२४॥भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्यशापंतस्मैप्रद-

श्रीमान् दामाद के साथ व्यापार करता भया ॥ २३ ॥ वे रमणीय चन्द्रकेतु राजा के नगर में गये तो इतने ही में प्रभु सत्यनारायण ॥ २४ ॥ उसका भ्रष्ट संकल्प देख कर यह शाप देते भये ।कि—इसको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब महा भारी भयानक, कठोर दुःख होवेगा ॥२५॥ सोही किसी दिन कोई चोर राजा का धन चुरा कर, वहां आया जहां इन बनियों की नौका ठहरी थी ॥ २६ ॥ तब वह चोर पिछाड़ी दौड़े आते

त्तवान्॥दारुणंकठिनंचास्यमहद्दुःखंभविष्यति ॥२५॥एकस्मिन्दिवसेराज्ञो धनमादायतस्करः॥तत्रैवचागतश्चौरोवणिजौयत्रसंस्थितौ॥२६॥ तत्पश्चा-द्धावकान्दूतान्दृष्ट्वाभीतेनचेतसा ॥ धनंसंस्थाप्यतत्रैवसतुशीघ्रमलक्षितः ॥ २७ ॥ ततोदूताः समायातायत्रास्तेसज्जनोवणिक् ॥ दृष्ट्वानृपधनंतत्रब-

राजदूतों को देख कें, भयभीत चित्त से द्रव्य को वहीं वैश्यों के पास रख के शीघ्र ही छिप गये ॥२७॥ फिर दूत वहां ही आये जहां ये सज्जन वैश्य बैठे थे । तो वहां राजा का धन धरा देख के उन दोनों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैश्यपुत्रों को बाध लाये ॥ २८ ॥ और दौड़ते २ राजाके समीप आकर, हर्ष से, बोले कि—हे प्रभो !
दो चोर लाये हैं, इन्हें देखके आज्ञा कीजिये ॥ २९ ॥ शीघ्रही राजा ने आज्ञा किये वे उन दोनोंको

ध्वानीतौवणिक्सुतौ ॥२८॥ हर्षेणधावमानाश्चऊचुर्नृपसमीपतः ॥ तस्क-
रौद्वौसमानीतौविलोक्याज्ञापयप्रभो ॥२९॥ राज्ञाज्ञप्तास्ततःशीघ्रंदृढंबध्वा
तुतावुभौ ॥ स्थापितौद्वौमहादुर्गेकारागारेऽविचारतः ॥३०॥ माययासत्य-
देवस्यनश्रुतंकैस्तयोर्वचः ॥ अतस्तयोर्धनंराज्ञागृहीतंचंद्रकेतुना ॥ ३१ ॥

दृढ़ बांधके महा भारी बंदीगृह में बिना विचारसेही करादिया ॥ ३० ॥ और सत्यनारायणजीकी मायासे
किसीने भी उनका वचन नहीं सुना. इसीसे चंद्रकेतु राजा ने उनका सब धन छीन लिया ॥ ३१ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर उन्हा सत्यनारायणके सूापसे उनके घरमें पत्नीभी अत्यत दुःखित हो गई. जो कुछ घरमें धन था सो सब चोर लेगये ॥ ३२ ॥ और चिंता रोगसहित क्षुधा पिपासासे अत्यंत दुःखित हो, कलावती

तच्छापाच्चतयोर्गेहेभार्याचैवातिदुःखिता ॥ चौरेणापहृतंसर्वंगृहेयच्चचास्थि तंधनम् ॥३२॥ आधिव्याधिसमायुक्ताक्षुत्पिपासातिदुःखिता ॥ अन्नचिंता पराभूत्वाबभ्रामचगृहेगृहे ॥ कलावतीतुकन्यापिबभ्रामप्रतिवासरम् ॥३३॥ एकस्मिन्दिवसेजाताक्षुधार्ताद्विजमंदिरम् ॥गत्वापश्यद्व्रतंतत्रसत्यनारायण-

कन्याभी अन्नकी चिंतामें परायण होकर, प्रतिदिन घर घरमें भ्रमती भई ॥ ३३ ॥ तब एक दिन वह कलावती क्षुधासे पीड़ित होकर ब्राह्मणके मंदिरमें चलीगई. और वहां जाकर सत्यनारयणजीका व्रत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होते देखा ॥ ३४ ॥ तब वहां बैठके कथा सुनकर, वर मागती भई. प्रसाद भक्षण करके, रात भये घरपर आई ॥ ३५ ॥ माता लीलावती उस कन्याको प्रेमसे कहने लगी कि—हे पुत्री ! तू रात्रिको

स्यच ॥ ३४ ॥ उपविश्यकथांश्रुत्वावरंप्रार्थितवत्यपि ॥ प्रसादभक्षणंकृत्वा ययौरात्रौगृहंप्रति ॥३५ ॥ माताकलावतींकन्यांकथयामासप्रेमतः ॥ पुत्रि रात्रौस्थिताकुत्रकिंतेमनसिवर्तते ॥३६॥ कन्याकलावतीप्राहमातरंप्रतिस-त्वरम् ॥ द्विजालयेव्रतंमातर्दृष्टंवांछितसिद्धिदम् ॥ ३७ ॥ तच्छ्रुत्वाकन्यका

कहां रही ? तेरे मनमें क्या है ? ॥ ३६ ॥ कलावती कन्या शीघ्रही माता लीलावतीसे बोली कि—हे मातः ! ब्राह्मणके घरमें मैंने वांछितसिद्धिदाता एक व्रत देखा है ॥ ३७ ॥ कन्याके उस वचनको सुन के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लीलावती वैश्यभार्या भी हर्ष से सत्यनारायणजी के वृत को करने के लिये तैयार भई ॥ ३८ ॥ और उस पतिव्रता ने भाई बंधुवों के साथ वृत को किया, और यह कहती भई कि-मेरे पति व यामात्र

वाक्यंव्रतंकर्तुंसमुद्यता ॥ सामुदातुवणिग्भार्यासत्यनारायणस्यच ॥ ३८ ॥
वृतंचक्रेसैवसाध्वीबन्धुभिःस्वजनैःसह ॥ भर्तृजामातरौक्षिप्रमागच्छेतां
स्वमाश्रमम् ॥ ३९ ॥ अपराधंचमेभर्तुर्जामातुःक्षन्तुमर्हसि ॥ व्रतेनाने-
नतुष्टोऽसौसत्यनारायणःपुनः ॥ ४० ॥

शीघ्र कुशलता से अपने घर आजावैं ॥ ३९ ॥ और हे सत्यनारायणजी ! मेरे पति का और दामाद का अपराध आप क्षमा करने योग्य हो, इस वृत से व प्रार्थना से सत्यनारायणस्वामी फिर भी प्रसन्न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होते भये ॥ ४० ॥ और उस चंद्रकेतु राजा को स्वप्न में यह कहा कि-हे राजन् ! इन कैदी बनियों को प्रातःकाल छोड़ देना ॥ ४१ ॥ और जो तुमने इनका धन छीना है सो शीघ्रही दे देना, नहीं तो

दर्शयामासस्वप्नंहिचन्द्रकेतुंनृपोत्तमम् ॥ बंदिनौमोचयप्रातर्वणिजौनृपस-
त्तम ॥ ४१ ॥ देयंधनंचतत्सर्वंगृहीतंयत्त्वयाधुना ॥ नोचेत्त्वांनाशयिष्या-
मिसराज्यधनपुत्रकम् ॥४२॥ एवमाभाष्यराजानंध्यानगम्योऽभवत्प्रभुः॥
ततःप्रभातसमयेराजाचस्वजनैःसह ॥ ४३ ॥

मैं राज्य और धन पुत्र समेत तेरे को नष्ट कर दूंगा ॥ ४२ ॥ राजा के प्रति ऐसे कह के, प्रभु सत्य-नारायण तो अंतरधान होगये, फिर प्रभात समय होते ही राजा ने मुसाहिबों के साथ ॥ ४३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सभा में बैठ कर के, उन सबों से वह अपना स्वप्न कहा और आज्ञा किया कि—बँधे भये उन दोनों वैश्य महाजनों को शीघ्र ही कैद से छोड़ाय लाओ ॥ ४४ ॥ राजा का ऐसा वचन सुन, वे लोग

उपविश्यसभामध्येप्राहस्वप्नंजनंप्रति ॥ बद्धौमहाजनौशीघ्रंमोचयद्वौवणि-
क्सुतौ ॥ ४४ ॥ इतिराज्ञोवचःश्रुत्वामोचयित्वामहाजनौ ॥ समानीयनृप-
स्याग्रेप्राहुस्तेविनयान्विताः ॥ ४५ ॥ आनीतौद्वौवणिक्पुत्रौमुक्तौनिगडबं-
धनात् ॥ ततोमहाजनौनत्वाचंद्रकेतुंनृपोत्तमम् ॥ ४६ ॥ स्मरंतौपूर्ववृत्तां-

दोनों महाजनों को छोड़ कर, राजा के आगे लाकर नम्रतायुक्त हो बोलते भये ॥ ४५ ॥ कि—ये दोनों वैश्यसुत बेड़ियों से छूड़ा कर लाये गये हैं. तब तो वे महाजन भी राजा चंद्रकेतु को नमस्कार कर के ॥ ४६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्व वृत्तात का स्मरण करने के भय से व्याकुल हुये कुछ भी न कह सके. तब राजा वैश्यसुतों को देख
के, आदरसहित यह वचन बोले ॥४७॥ कि—तुम को प्रारब्ध से यह महा दुःख प्राप्त भया पर अब

तंनोचतुर्भयविह्वलौ ॥ राजावणिक्सुतौवीक्ष्यवचःप्रोवाचसादरम् ॥ ४७ ॥
दैवात्प्राप्तंमहद्दुःखमिदानींनास्तिवैभयम् ॥ तदानिगडसंत्यागंक्षौरकर्माद्य
कारयत् ॥ ४८ ॥ वस्त्रालंकारकंदत्त्वापरितोष्यनृपश्चतौ ॥ पुरस्कृत्यवणि-
क्पुत्रौवचसातोषयद्भृशम् ॥४९॥ पुरानीतंतुयद्द्रव्यंद्विगुणीकृत्यदत्तवान् ॥

तुम को कुछ भी भय नहीं है. तब राजा ने उनकी हथकड़ी और गले की शृंखला कटवाई और उनका
क्षौरकर्मादिक करवाया ॥ ४८ ॥ और राजा उन वैश्यसुतों को वस्त्र अलंकारादिक दे कर, प्रसन्न कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के सुंदर वचन से अत्यंत प्रसन्न करता भया ॥ ४९ ॥ और उनका जो पहिले धन ले लिया था सो दुगुना कर के देता भया. फिर उन दोनों से राजा बोले कि—हे साधु! तुम अपने घर को राजी खुशी से जाव ॥ ५० ॥ तो वे भी राजा को प्रणाम कर के, बोले कि आपकी प्रसन्नता से जाते

प्रोवाचतौततोराजागच्छसाधोनिजाश्रमम् ॥५०॥ राजानंप्रणिपत्याहगंतव्यंत्वत्प्रसादतः ॥ इत्युक्त्वातौमहावैश्यौजग्मतुःस्वगृहंप्रति ॥५१॥ इति श्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायांतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥

हैं. ऐसे कह कर, वे महाजन अपने घर को जाते भये ॥ ५१ ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणीय रेवाखण्ड की सत्यनारायण कथा के सरल देशी भाषानुवाद में तृतीय अध्याय पूरा भया ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौथे अध्याय में दण्डीस्वरूप भगवान् के आख्यान का वर्णन करते हैं. सूतजी बोले कि—हे शौनक आदि ऋषियो ! तब तो वैश्य मंगलाचरणपूर्वक, शुभ यात्रा करता भया और ब्राह्मणों को धन दे कर, अपने नगर

सूतउवाच ॥ यात्रांतुकृतवान्साधुर्मंगलायनपूर्विकाम् ॥ ब्राह्मणायधनंद-
त्वातदातुनगरंययौ ॥ १ ॥ कियद्दूरेगतेसाधौसत्यनारायणःप्रभुः ॥ जिज्ञा-
सांकृतवान्साधोकिमस्तितवनौस्थितम् ॥ २ ॥ ततोमहाजनौमत्तौहेलया
चप्रहस्यवै ॥ कथंपृच्छसिभोदंडिन्मुद्रांनेतुंकिमिच्छसि ॥ ३ ॥ लतापत्रा-

को चला ॥ १ ॥ उस वैश्य के कुछ दूर जाने पर दण्डीस्वरूप सत्यनारायणजी पूछते भये कि—हे साधू ! तुम्हारी नौका में क्या क्या वस्तु है ? ॥ २ ॥ तब तो ये मत्त भये महाजन ठट्ठा कर, हँस के बोले कि—हे दण्डी ! तू क्यों पूछते हो । ? क्या रुपया लेना चाहते हो ? ॥ ३ ॥ हमारी नौका में तो लता-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पत्तादिक है. उसके इस निठुराई के वचन को सुन सत्यनारायण प्रभु बोले कि—तुम्हारा ही वचन सत्य हो, अर्थात् वचन के अनुसार लतापत्तादिक ही हो जावै ॥४॥ ऐसा कह कर, दण्डीजी तो शीघ्र ही उस

दिकंचैववर्ततेतरणौमम ॥ निष्ठुरंचवचःश्रुत्वासत्यंभवतुतेवचः ॥ ४ ॥ एव मुक्त्वागतःशीघ्रंदंडीतस्यसमीपतः ॥ कियद्दूरेततोगत्वास्थितःसिंधुसमीपतः ॥ ५ ॥ गतेदंडिनिसाधुश्चकृतनित्यक्रियस्तदा ॥ उत्थितांतरणींदृष्ट्वा विस्मयंपरमंययौ ॥ ६ ॥

के पास से चले आये. फिर ये कुछ दूर जाकर समुद्र के तट पर ठहरे ॥५॥ फिर दंडीजी के जाने पर अपना नित्य का नियम कर के साधु वैश्य उस नौका को उठी भई देख कर, परम आश्चर्य को प्राप्त भया॥६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर लतापत्त्रादिक देख कर मूर्छित हो भूमि में गिर पड़ा. कुछ देर बाद होश में आकर सचेत हो कर चिंतायुक्त, भया ॥७॥ तब उसके यामात्र ने उससे यह वचन कहा कि—तुम किस लिये शोक करते हो?

दृष्ट्वालतादिकंचैवमूर्च्छितोन्यपतद्भुवि ॥ लब्धसंज्ञोवणिक्पुत्रस्ततश्चिंतता
न्वितोऽभवत् ॥७॥ तदातुदुहितुःकांतोवचनंचेदमब्रवीत् ॥ किमर्थंक्रियतेशो-
कःशापोदत्तश्चदंडिना ॥८॥ शक्यतेतेनसर्वंहिकर्तुंचात्रनसंशयः ॥ अत-
स्तच्छरणंयामोवांछितार्थोभविष्यति ॥९॥ जामातुर्वचनंश्रुत्वातत्सकाशं-

दंडीजी ने तुम को शाप दिया है ॥८॥ सो वही सब मनोरथ पूर्ण कर सकते हैं इसमें कुछ संदेह नहीं है. इससे उनकी शरण जाओ तो तुम्हारा वांछित प्रयोजन सिद्ध होगा ॥ ९ ॥ तब यामात्र का वचन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुन के उसी समय उनके पास गया और दंडीजी के दर्शन कर, नमस्कार कर के आदरसहित यह वचन बोला ॥ १० ॥ कि—जो मैंने आप के आगे कहा सो मेरा अपराध क्षमा कीजिये. ऐसे बारंबार नमस्कार

गतस्तदा ॥ दृष्ट्वाचदंडिनंभक्त्यानत्वाप्रोवाचसादरम् ॥ १० ॥ क्षमस्वचा-
पराधंमेयदुक्तंतवसन्निधौ ॥ एवंपुनःपुनर्नत्वामहाशोकाकुलोऽभवत् ॥११॥
प्रोवाचवचनंदंडीविलपंतंविलोक्यच ॥ मारोदीःशृणुमद्वाक्यंममपूजाबहि-
र्मुखः ॥ १२ ॥ ममाज्ञयाचदुर्बुद्धेलब्धंदुःखंमुहुर्मुहुः ॥ तच्छ्रुत्वाभगवद्वाक्यं

करके, शोक से व्याकुल हो विलाप करने लगा ॥११॥ तब विलाप करते हुये उसको देख कर दंडीजी बोले कि—रो मत. मेरा वचन सुन, तू मेरी पूजा से बहिर्मुख हो रहा है, अर्थात् मेरी पूजा करने को तू भूल गया है ॥ १२ ॥ और हे दुष्टबुद्धे! मेरी ही आज्ञा से तुमको बारंबार दुःख प्राप्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता है भगवान् के उस वचन को सुन, स्तुति करने को तैयार भया ॥ १३ ॥ साधु वैश्य बोला कि—हे प्रभो ! हे सत्यनारायण ! हे स्वामिन् ! आप की माया से मोहित हुये ब्रह्मादिक सब देवता

स्तुतिंकर्तुंसमुद्यतः ॥१३॥ ॥साधुरुवाच॥ त्वन्मायामोहिताःसर्वेब्रह्माद्यास्त्रि
दिवौकसः ॥ नजानंतिगुणान्रूपंतवाश्चर्यमिदंप्रभो ॥१४॥ मूढोऽहंत्वांक-
थंजानेमोहितस्तवमायया॥ प्रसीदपूजयिष्यामियथाविभवविस्तरैः ॥१५॥
पुरावित्तंचतत्सर्वंत्राहिमांशरणागतम्॥ श्रुत्वाभक्तियुतंवाक्यंपरितुष्टोजना-

भी आप के गुणों को और आश्चर्यकारक आप के रूप को नहीं जानते ॥ १४ ॥ तो आप की माया से मोहित व मूर्ख मैं आप को कैसे जानूं ? सो अब आप प्रसन्न होइये. मैं यथाऐश्वर्य विस्तारसहित आप का पूजन करूंगा ॥ १५ ॥ और मेरा पहिले का जो धन था सो सब वैसाही करो तथा मेरी शरण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आये की रक्षा करो, ऐसा भक्तियुक्त वचन को सुन सत्यनारायणजी प्रसन्न भये ॥ १६ ॥ और वांछित वर देकर, वहांही अंतर्धान हुये. फिर तो वैश्य अपनी नाव को धन से भरी देख उस पर चढ़ कर ॥१७॥

दैन: ॥ १६ ॥ वरंचवांछितंदत्त्वा तत्रैवांतर्दधेहरिः ॥ ततोनावंसमारुह्यदृ-
ष्ट्वावित्तप्रपूरिताम् ॥ १७॥ कृपयासत्यदेवस्यसफलंवांछितंमम ॥ इत्यु-
क्त्वास्वजनैःसार्धंपूजांकृत्वायथाविधि ॥ १८ ॥ हर्षेणचाभवत्पूर्णः सत्यदे-
वप्रसादतः ॥ नावंसंयोज्ययत्नेनस्वदेशगमनंकृतम् ॥ १९ ॥ साधुर्जामा-

"सत्यदेवजी की कृपा से मेरा वांछित फल सिद्ध भया" ऐसे कह अपने जनों के साथ यथायोग्य सत्यनारायण का पूजन कर के ॥१८॥ सत्यदेवजी की प्रसन्नता से हर्ष से पूर्ण होता भया. और यत्न से नाव को चलाने योग्य करके, अपने देश को यात्रा की ॥ १९ ॥ फिर साधु वैश्य अपने यामात्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से बोला कि—देखोः! हमारी यह रत्नपुरी सामने दीखने लगी है, फिर अपने धन के रखवारे दूत को भेजा ॥ २० ॥ यह दूत नगर में जाकर और साधु की भार्या को देख के नमस्कार कर, हाथ जोड़ कर

तरंप्राहपश्यरत्नपुरींमम ॥ दूतंचप्रेषयामासनिजवित्तस्यरक्षकम् ॥ २० ॥
दूतोऽसौनगरंगत्वासाधुभार्यांविलोक्यच ॥ प्रोवाचवांछितंवाक्यंनत्वाबद्धां-
जलिस्तदा ॥ २१ ॥ निकटेनगरस्यैवजामात्रासहितोवणिक् ॥ आगतो
बंधुवर्गैश्चवित्तैश्चबहुभिर्युतः ॥ २२ ॥ श्रुत्वादूतमुखाद्वाक्यंमहाहर्षवती-

वांछित वचन कहता भया ॥ २१ ॥ कि—अपने दामाद के सहित तथा भाई और बंधु व बहुत से धन माल से संयुक्त सेठजी इस नगर के निकट ही आगये हैं ॥ २२ ॥ तो महाहर्षवती लीलावती दूत के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुख से यह वचन सुन कर, फिर सत्यनारायणजी की पूजा कर के कलावती से बोली ॥ २३ ॥
कि—मैं शीघ्रही साधुजी के देखने को जाती हूं, तू भी जल्दी आ, ऐसा माता का वचन सुन, व्रत को

सती ॥ सत्यपूजांततःकृत्वाप्रोवाचतनुजांप्रति ॥ २३ ॥ व्रजामिशीघ्रमा-
गच्छसाधुसंदर्शनायच ॥ इतिमातृवचःश्रुत्वाव्रतंकृत्वासमाप्यच ॥ २४ ॥
प्रसादंचपरित्यज्यगतासापिपतिंप्रति ॥ तेनरुष्टःसत्यदेवोभर्तारंतरणींतथा
॥ २५ ॥ संहृत्यचधनैःसार्धंजलेतस्यावमज्जयत् ॥ ततःकलावतीकन्या न

संपूर्ण कर के ॥ २४ ॥ प्रसाद का परित्याग कर, वह भी अपने पति को देखने चली तब उस निज-
प्रसाद के न लेने से रोष को प्राप्त भये सत्यदेवजी उसके भर्ता को और उसकी नौका को ॥ २५ ॥
सब धन मालसहित समुद्र के जल में डुबाते भये. फिर तो कलावती बोली अपने पति को न देख कर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥ २६ ॥ महा भारी शोक से विलाप करती भूमि में गिरी तब उस दामाद सहित डूबी नाव को और बहुत दुःखित भई उस कन्या को देख कर ॥ २७ ॥ भयभीत मन से साधु नामक बनिया बोला कि–

विलोक्यनिजंपतिम् ॥ २६ ॥ शोकेनमहतातत्ररुदतीचापतद्भुवि ॥ दृष्ट्वातथाविधांनावंकन्यांचबहुदुःखिताम् ॥ २७ ॥ भीतेनमनसासाधुः किमाश्चर्यमिदंभवेत् ॥ चिंत्यमानाश्चतेसर्वेबभूवुस्तरिवाहकाः ॥ २८ ॥ ततोलीलावतीकन्यांदृष्ट्वासाविह्वलाभवत् ॥ विललापातिदुःखेन भर्तारंचे-

यह क्या आश्चर्य होता है ? और वह सारे नाव चलानेवाले भी चिंता करने लगे ॥२८ ॥ फिर लीलावती उस कलावती कन्या को देख के व्याकुल भई और अत्यंत दुःख से विलाप करने लगी. तथा पति

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से यह बोलीं ॥२९॥ कि—अभी नावसहित वह कैसे अलक्षित हो गया नौका अर्थात् देख नहीं पड़ती ? न जाने किस देवता के अनादर से वह नौका हरी गई ॥ ३० ॥ सत्यनारायणजी का माहात्म्य किससे

मब्रवीत् ॥ २९ ॥ इदानींनौकयासार्धंकथंसोऽभूदलक्षितः ॥ नजानेकस्य-
देवस्यहेलयाचैवसाहृता ॥३०॥ सत्यदेवस्यमाहात्म्यंज्ञातुंवाक्येनशक्यते॥
इत्युक्त्वाविललापैवततश्चस्वजनैःसह ॥ ३१ ॥ ततोलीलावतीकन्यांक्रो-
डेकृत्वारुरोदह ॥ ततःकलावतीकन्यानष्टेस्वामिनिदुःखिता ॥ ३२ ॥ ॥

जाना जाता है ? अर्थात् किसी से नहीं, ऐसे कह कर, इष्ट मित्रों के साथ विलाप करती भई ॥३१॥ फिर लीलावती बेटी को गोद में लेकर रोई. तब अपने स्वामी के नाश होने पर दुःखी भई कलावती॥३२॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसकी खड़ाऊं लेकर उसके पीछे जाने की अर्थात् मरने की इच्छा करती भई. चेटी के इस चरित्र को देख कर स्त्रीसहित वह सज्जन महाजन ॥३३॥ अत्यंत शोक से संतप्त हो धर्मात्मा विचारता भया कि—यह सत्य-

गृहीत्वापादुकेतस्यानुगंतुंचमनोदधे॥ कन्यायाश्चरितंदृष्ट्वासभार्यःसज्जनो वणिक् ॥३३॥ अतिशोकेनसंतप्तश्चिंतयामासधर्मवित् ॥ हृतंवासत्यदेवे-नभ्रांतोऽहंसत्यमायया ॥ ३४ ॥ सत्यपूजांकरिष्यामियथाविभवविस्तरैः॥ इतिसर्वान्समाहूयकथयित्वामनोरथम् ॥ ३५ ॥ नत्वाचदण्डवद्भूमौसत्य-

नारायणजी ने हरण किया. मैं सत्यनारायणजी ही की माया से भ्रमाया गया हूं ॥ ३४ ॥ और मैं यथा-योग्य द्रव्यऐश्वर्य से विस्तारसहित सत्यनारायणजी की पूजा करूंगा. ऐसे सबको बुला करके अपना मनोरथ सुना के ॥ ३५ ॥ सत्यदेवजी को बार बार भूमि में दंडवत प्रणाम किया, तब तो दीनों का परिपालन कर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेवाले देव सत्यनारायणजी प्रसन्न हुये ॥३६॥ सो भक्तदयालु कृपा कर के यह वचन बोले कि—तुम्हारी कन्या प्रसाद को त्याग कर के पति को देखने को आई ॥ ३७ ॥ इससे इस कलावती कन्या का पति

देवंपुनःपुनः ॥ ततस्तुष्टःसत्यदेवोदीनानांपरिपालकः ॥ ३६ ॥ जगादव-
चनंचैवकृपयाभक्तवत्सलः ॥ त्यक्त्वाप्रसादंतेकन्यापतिंद्रष्टुंसमागता
॥ ३७ ॥ अतोऽदृष्टोभवत्तस्याः कन्यकायाःपतिर्ध्रुवम् ॥ गृहंगत्वाप्रसादंच
भुक्त्वाचायातिचेत्पुनः ॥ ३८ ॥ लब्धभर्त्रीसुतासाधोभविष्यतिनसंशयः॥

निश्चय अदृश्य हो गया. अब तो यह घर जाय, प्रसाद लेकर फिर आवै ॥३८॥ तो हे साधु वैश्य! तुम्हारी कन्या पति को प्राप्त होजावेगी इसमें संशय नहीं, वह कन्या आकाशमंडल से ऐसा वचन सुन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर ॥ ३९ ॥ तभी शीघ्र घर जाकर, प्रसाद लेकर भक्षण करती भई और फिर आकर के, स्वजन सुन्दर पति को देखती भई ॥ ४० ॥ फिर कलावती पुत्री अपने पिता से बोली कि अब घर चलो विलंब किस

कन्यकातादृशंवाक्यंश्रुत्वागगनमंडलात् ॥ ३९ ॥ क्षिप्रंतदागृहंगत्वाप्रसादंचबुभोजसा ॥ सापश्चात्पुनरागत्यददर्शस्वजनंपतिम् ॥ ४० ॥ ततः कलावतीकन्याजगादपितरंप्रति ॥ इदानींचगृहंयाहिविलम्बंकुरुषेकथम् ॥ ॥ ४१ ॥ तच्छ्रुत्वाकन्यकावाक्यंसंतुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः ॥ पूजनंसत्यदेवस्य कृत्वाविधिविधानतः ॥ ४२ ॥ धनैर्बंधुगणैःसार्धंजगामनिजमंदिरं ॥ पौर्ण-

लिये करते हो ? ॥ ४१ ॥ वह वैश्यसुत साधु पुत्री के उस वचन को सुन कर प्रसन्न भया. और सत्यनारायणजी का पूजन विधि विधान से कर के ॥ ४२ ॥ फिर धन व भाई बंधुओं के साथ अपने घर को

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आया और हर पूर्णमासी तथा संक्रांति को सत्यनारायणजी का पूजन करता रहा ॥४३॥ तो इस लोक में सब सुख भोग कर, अंतसमय सत्यलोक को जाता भया ॥४४॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडीय सत्यनाराय

मास्यांचसंक्रांतौकृतवान्सत्यपूजनम् ॥ ४३ ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वाचान्ते
सत्यपुरंययौ ॥ ४४ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायां
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
सूतउवाच॥ अथान्यच्चप्रवक्ष्यामिश्शृणुध्वंमुनिसत्तमाः ॥ आसीत्तुङ्गध्वजो

णकथा के सरल भाषानुवाद में साधुवैश्य का उपाख्यान वर्णन इस नाम से अध्याय ४ भया ॥

अ० ५में तुंगध्वज राजा का वृत्तांत वर्णन किया जाता है. सूतजी शौनकादिक ऋषियों से कहते हैं कि—हे मुनि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठो! और भी उपाख्यान कहता हूं. तुम सब श्रवण करो. प्रजा के पालन में परायण एक तुंगध्वज नाम का राजा भया ॥१॥ सो सत्यनारायणजी के प्रसाद को त्याग कर, इसके बाद बड़े दुःख को प्राप्त होता भया,

राजाप्रजापालनतत्परः ॥ १ ॥ प्रसादंसत्यदेवस्यत्यक्त्वादुःखमवापसः ॥
एकदासवनंगत्वाहत्वाबहुविधान्पशून् ॥ २ ॥ आगत्यवटमूलंचदृष्ट्वासत्य-
स्यपूजनम् ॥ गोपाःकुर्वन्तिसन्तुष्टाभक्तियुक्ताःसबान्धवाः ॥ ३ ॥

एक समय वह वन में जाय बहुत प्रकार के पशुओं को शिकार में मार के ॥२॥ एक बड़ के तले आकर वहां सत्यनारायणजी का पूजन देख कर, जो भाई बंधुओं सहित भक्तियुक्त अहिर लोग कर रहे थे ॥३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तब राजा देख के, अहंकार करके, न वहां गया और न नमस्कार किया फिर वे सब गोपाल राजा के समीप प्रसाद को ॥ ४ ॥ रख कर फिर आकर यथेच्छ आप भी प्रसाद भोजन करके सुचित्त भये,

राजादृष्ट्वातुदर्पेणनगत्वातंननामसः ॥ ततोगोपगणाःसर्वेप्रसादंनृपसान्नि-
धौ ॥ ४ ॥ संस्थाप्यपुनरागत्यभुक्त्वासर्वेयथेप्सितम् ॥ ततःप्रसादंसन्त्य-
ज्यराजादुःखमवापसः ॥ ५ ॥ तस्यपुत्रशतंनष्टंधनधान्यादिकंचयत् ॥
सत्यदेवेनतत्सर्वंनाशितंममनिश्चितम् ॥ ६ ॥ अतस्तत्रैवगच्छामियत्र

उस प्रसाद को त्याग करते ही, राजा तुंगध्वज दुःख को प्राप्त होता भया ॥ ५ ॥ उसके सौ (१००) पुत्र थे सो नाश को प्राप्त भये, और जो धन धान्यादिक था सो भी नष्ट होगया तब जाना कि—यह सब मेरा निश्चय सत्यदेवजी करके नाश को प्राप्त भया है ॥ ६ ॥ इससे अब वहां ही जाऊंगा जहां

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्यदेवजी का पूजन हो रहा है मन से ऐसा निश्चय करके, गोपाला के पास गया ॥ ७ ॥ तब तो इस राजा ने गोपालों के साथ सत्यदेवजी की पूजा श्रद्धा भक्तियुक्त हो यथाविधि से करी ॥ ८ ॥

देवस्यपूजनम् ॥ मनसातुविनिश्चित्यययौगोपालसन्निधौ ॥ ७ ॥ ततो ऽसौसत्यदेवस्यपूजांगोपगणैःसह ॥ भक्तिश्रद्धान्वितोभूत्वाचकारविधिनानृपः ॥ ८ ॥ सत्यदेवप्रसादेनधनपुत्रान्वितोभवत् ॥ इहलोकेसुखंभुक्त्वा चांतेसत्यपुरंययौ ॥ ९ ॥ यइदंकुरुतेसत्यव्रतंपरमदुर्लभम् ॥ ॥

तब सत्यदेवजी के प्रसाद से फिर भी धन पुत्रों से युक्त हो गया, और इस लोक में अनेक सुख भोग कर, अंतसमय में सत्यजी के पुर (वैकुंठलोक) को गया ॥ ९ ॥ जो मनुष्य इस परमदुर्लभ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्यनारायणजी के व्रत को करते हैं और जो भक्तिसहित इस फल देनेवाली पुनीत कथा को सुनते हैं ॥१०॥ तो सत्यनारायणस्वामी की प्रसन्नता से उसको धन धान्य आदि सब संपत्तियां होती हैं, दरिद्री

शृणोतिचकथांपुण्यांभक्तियुक्तःफलप्रदाम् ॥ १० ॥ धनधान्यादिकंतस्य भवेत्सत्यप्रसादतः ॥ दरिद्रोलभतेवित्तंबद्धोमुच्येतबंधनात् ॥ ११ ॥ भीतोभयात्प्रमुच्येतसत्यमेवनसंशयः ॥ ईप्सितंचफलंभुक्त्वाचांतेसत्यपुरं व्रजेत् ॥ १२ ॥ इतिवःकथितंविप्राःसत्यनारायणव्रतम् ॥ यत्कृत्वासर्वदुःखे-

हो तो धन पावे, बँधा भया होय तो राजबंधन से छूट जाय ॥ ११ ॥ भयभीत होय तो भय से रहित होजावे, सत्यही इसमें संशय नहीं, और यहां वांछित फल भोग के अंत में सत्यजी के पुर (वैकुंठलोक) को प्राप्त होता है ॥ १२ ॥ सूतजी ने कहा कि—हे ब्राह्मणो ! इस प्रकार करके हमने यह सत्यनारा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यणजी का वृत तुम से कहा, मनुष्य जिसको कर के, सब पापों से छूट जाता है ॥१३॥ और विशेष कर
कलियुग में सत्यनारायणजी की पूजा ही अवश्य फल देनेवाली है—सो इन्हें कोई तो काल ऐसे कहेंगे,

भ्योमुक्तोभवतिमानवः ॥ १३ ॥ विशेषतःकलियुगेसत्यपूजाफलप्रदा ॥
केचित्कालंवदिष्यंतिसत्यमीशंतमेवच ॥ १४ ॥ सत्यनारायणंकेचित्सत्य-
देवंतथापरे ॥ नानारूपधरोभूत्वासर्वेषामीप्सितप्रदः ॥ १५ ॥

कोई सत्यजी, कोई ईश, ऐसे कहेंगे ॥ १४ ॥ कोई सत्यनारायण तैसे कोई सत्यदेव ऐसे कहेंगे और
येही सत्यनारायणजी नानारूपधारी हो, सब के वांछित फल प्रदाता हैं ॥ १५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और यही सनातन अविनाशी भगवान् सत्यनारायणजी कलियुग में व्रतरूपवाले होंगे. और इस सब के वांछितदेनेवाले रूप को श्रीविष्णुजी ने धारण किया है ॥ १६॥ हे मुनिश्रेष्ठो ! जो मनुष्य इसको नित्य

भविष्यतिकलौसत्यव्रतरूपीसनातनः ॥ श्रीविष्णुनाधृतंरूपंसर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १६ ॥ यइदंपठतेनित्यंशृणोतिमुनिसत्तमाः ॥ सत्यंनश्यन्ति पापानिसत्यदेवप्रसादतः ॥ १७॥ व्रतंयैस्तुकृतंपूर्वंसत्यनारायणस्यच ॥ तेषांत्वपरजन्मानिकथयामिमुनीश्वराः ॥ १८ ॥ शतानन्दोमहाप्राज्ञःसुदा-

पढ़ते हैं और श्रवण करते हैं तो सत्यदेवजी की कृपा से सत्यही उसके पाप नाशको प्राप्त होते हैं ॥१७॥ और जिन्होंने पहिले सत्यनारायणजी का व्रत किया है उनके पीछे के जन्म हे मुनीश्वरो ! मैं कहता हूं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

॥१८॥ महाबुद्धिमान् शतानंद तो सुदामा भया सो उसी जन्म में श्रीकृष्णजी का ध्यान कर, मोक्ष को प्राप्त भया ॥१९॥ और काष्ठ का बोझा उठानेवाला भील्ल राजा गुह भया. सो उसी जन्म में श्रीराम-

माब्राह्मणोह्यभूत् ॥ तस्मिन्जन्मनिश्रीकृष्णंध्यात्वामोक्षमवापह ॥ १९ ॥ काष्ठभारवहोभिल्लोगुहराजोबभूवह ॥ तस्मिन्जन्मनिश्रीरामंसेव्यमोक्षं जगामवै ॥ २० ॥ उल्कामुखोमहाराजोनृपोदशरथोभवत् ॥ श्रीरंगनाथं संपूज्यश्रीवैकुण्ठंतदागमत् ॥ २१ ॥ धार्मिकःसत्यसन्धश्चसाधुर्मोरध्वजो-

चंद्रजी की सेवा करके, मोक्ष को प्राप्त भया ॥ २० ॥ और उल्कामुख महाराजा दशरथराज भये. सो श्रीरङ्गनाथजी का पूजन कर, वैकुंठलोक को गये ॥ २१ ॥ और धर्मात्मा सत्यव्रती साधु वैश्य मयूर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्वज नाम राजा होता भया. सो अपना अर्द्ध देह आरा से काट भगवान् को देकर मोक्ष को प्राप्त भया. इसकी कथा जैमिनिमें है ॥२२॥ और तुंगध्वजराजा स्वायंभूव मनु भया सो सब भगवत्सम्बन्धी धर्मों

ऽभवत् ॥ देहार्धंक्रकचैश्छित्त्वादत्त्वामोक्षमवापह ॥ २२ ॥ तुङ्गध्वजोमहा-
राजःस्वायंभूरभवत्किल ॥ धर्मान्भागवतान्कृत्वाश्रीवैकुंठंतदागमत्॥२३॥
॥इतिश्रीस्कंदपुराणेरेवाखंडेसत्यनारायणव्रतकथायांश्रीसत्यनारायणमाहा-
त्म्यवर्णनंनामपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ इतिश्रीसत्यनारायणकथा समाप्ता ॥

करके, श्रीवैकुंठ को गया ॥ २३ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडीय सत्यनारायणव्रतकथा के सरल भाषा-नुवाद में तुंगध्वज का वर्णन इस नाम से ५ वां अध्याय भया है ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रु.स०
४३

ब्र०क०

इस पुस्तक को काशीजी के सुप्रसिद्ध गौघाटनिवासी पण्डित बालमुकुन्द मालवीय
कर्मकांडी ने अपने प्राचीन पुस्तकालय के पुस्तकों के अनुसार
अति परिश्रम से शोधा और जिसको भार्गव
पुस्तकालय ने प्रकाशित किया ।

पुस्तक मिलने का ठिकाना—
मनेजर, भार्गव पुस्तकालय,
चौक, बनारस सिटी ।

४३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्यनारायणव्रतपूजा सामग्री ।

केसर मिला हुआ घँसा मलयागिर चन्दन
रोरी
नारा
अबीर
बुक्का
माला, फूल, तुलसीदल
धूपबत्ती वा दशाङ्ग
दीपबत्ती
नैवेद्य
पेड़ा, बतासा

पंचमेवा
ऋतु फल, केला वगैरह
पान छुट्टा वा बीड़ा
सोपाड़ी
नारियर
कपूर
लवंग, लायची
अतर
केले का खंभा
पंचपल्लव
तोरन

हो सकै तो सोने की मूर्ति
कलश
यज्ञोपवीत
पंचरत्न
वस्त्रोपवस्त्र
चावल
कसार के वास्ते
घृत, चीनी, गोहूं का आटा
गौ का दूध
गौ की दही
गौ का घृत

चीनी
मधु
चौकी व सिंहासन मय बिछौना चंदवा
पीढ़ा
प्रधानदक्षिणा
पैसा, रेचकी
दिया
कसोरा
दोना
शंख, घंटा, आरती वगैरह
हांडी

Tara Printing Works, Benares.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इति सत्यनारायण कथा भा० टी० समाप्ता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri